मूल्य : 20/- पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 डाक पंजीकरण संख्या : UP/GBD- 249/2020-2022

वर्ष : ५ नवम्बर : २०२०, विक्रमी सम्वत् : २०७७ सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२१, दयानन्दाब्द : १९७ अंक : ५

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883 ईस्वी सन्
1881-1940 विक्रमी सम्वत्

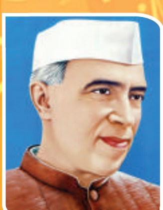

पं. जवाहर लाल नेहरू
(जन्म दिवस : 14 नव.)

महात्मा हंसराज
(स्मृति दिवस : 15 नव.)

लाल लाजपत राय
बलिदान दिवस : 17 नव.)

आप सभी को ज्योति पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

संगठनसूक्त

ओं संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर।।
हे प्रभो! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन-वृष्टि को।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
हों विचार समान सबके चित्त-मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर भोग्य पा सब श्रेष्ठ हों।।

⌘⌘⌘⌘⌘⌘

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख-सम्पदा।।

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : आर्यसमाजों में फैलती...	2
2.	ईश्वर जो करता है अच्छा ही...	3
3.	मानव कल्याण के स्वर्णिम सूत्र	4-5
4.	महर्षि दयानन्द और दीपावली	6-7
5.	जीवन का उद्देश्य समझें...	7
6.	मनुष्य की पूर्ण आत्मोन्नति वेदज्ञान...	8-9
7.	संध्या आदि पंच सकारों के...	10
8.	महापुरुषों को नमन...	12
9.	सत्यार्थ प्रकाश की महिमा...	15
10.	अच्छाई पलट-पलट कर आती है	21
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : बहुत अधिक चावल खाने...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304
captakg21@yahoo.co.in

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल

प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी

संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17, Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022
Date of Dispatch 12 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

आर्यसमाजों में फैलती उदासीनता

आर्यसमाज की स्थापना स्वामी महर्षि दयानन्द ने विशेष उद्देश्यों के लिए की थी। महर्षि का मुख्य उद्देश्य वेद का प्रचार-प्रसार और वेदों की ओर लौटो था। वेदोऽखिलोधर्ममूलम्- अखिल वेद धर्म का मूल है। महर्षि दयानन्द ने वेदों को स्वतः प्रमाण माना है। आर्य समाज ने पूरी शक्ति के साथ इस कार्य को किया परिणाम स्वरूप ज्ञान का प्रकाश सर्वत्र फैला, वलि प्रथा जैसी कुरीतियों पर अंकुश लगा। जातिवाद की विषैली सोच शिथिल पड़ती गयी। आर्य समाज की स्थापना एवं प्रयासों से विधवा विवाह होने लगे। मूर्तिपूजा जैसी बीमारी से हटकर लोग सर्वशक्तिमान निराकार ईश्वर की उपासना की ओर अग्रसर हुए। स्त्री शूद्रौ नाधीयाताम् जैसी धारणाओं का आर्यों ने पुरजोर विरोध किया। महर्षि के भक्तों ने उद्घोष दिया-यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। 'यथेमां वाचं कल्याणि मा वदानि जनेभ्य:' जैसे प्रभावों के साथ आर्यों ने स्त्रियों के सम्मान तथा उनकी शिक्षा का पुरजोर समर्थन किया। देश की आजादी में आर्यसमाज के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, लाला लाजपत राय, पं. रामप्रसाद बिस्मिल जैसे लोगों के नेतृत्व में एक ऐसा आंदोलन जिसने हिन्दुस्तान में नव चेतना, नव ऊर्जा, नव उत्साह का संचार किया। तर्क की कसौटी पर हर बात परखी जाने लगी। ईसाई, मुसलमान जैसे मतों के प्रभाव को आर्य विद्वानों ने पूरी तरह निष्प्रभावी बना दिया। भारत में आमूल-चूल परिवर्तन नजर आने लगा, घर-घर संध्या, यज्ञ होने लगे। देश भक्ति का भाव सर्वत्र बढ़ने लगा। आर्यसमाजों की स्थापना होती चली गयी, शिक्षण संस्थान बनते चले गये, आर्य समाज की बहुत सारी बड़ी-बड़ी संस्थाएं है, अरबों-खरबों की सम्पत्तियां हैं। बड़े-बड़े शहरों में बड़ी-बड़ी लोकेशन पर ये सम्पतियां जिन पर या तो लोगों ने कब्जा कर लिया है या करने की तैयारी में हैं। आर्य समाज की सभाएं सोई पड़ी हैं, आर्य जनता उदासीन है, निरंतर आर्य समाज का क्षय हो रहा है। आर्य सदस्यों के नाम पर पाखंडी, लालची, आर्य समाज में घुसते जा रहे हैं। इस दिवाली पर सार्वदेशिक सभा को सभी सम्पत्तियों की रक्षा के लिए एक टीम बनानी चाहिए। यही महर्षि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

■ **आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार**

देश की आजादी में आर्यसमाज के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, लाला लाजपत राय, पं. रामप्रसाद बिस्मिल जैसे लोगों के नेतृत्व में एक ऐसा आंदोलन जिसने हिन्दुस्तान में नव चेतना, नव ऊर्जा, नव उत्साह का संचार किया। तर्क की कसौटी पर हर बात परखी जाने लगी। ईसाई, मुसलमान जैसे मतों के प्रभाव को आर्य विद्वानों ने पूरी तरह निष्प्रभावी बना दिया। भारत में आमूल-चूल परिवर्तन नजर आने लगा, घर-घर संध्या, यज्ञ होने लगे। देश भक्ति का भाव सर्वत्र बढ़ने लगा। आर्यसमाजों की स्थापना होती चली गयी, शिक्षण संस्थान बनते चले गये, आर्य समाज की बहुत सारी बड़ी-बड़ी संस्थाएं है, अरबों-खरबों की सम्पत्तियां हैं। बड़े-बड़े शहरों में बड़ी-बड़ी लोकेशन पर ये सम्पतियां जिन पर या तो लोगों ने कब्जा कर लिया है या करने की तैयारी में हैं। आर्य समाज की सभाएं सोई पड़ी हैं, आर्य जनता उदासीन है, निरंतर आर्य समाज का क्षय हो रहा है। आर्य सदस्यों के नाम पर पाखंडी, लालची, आर्य समाज में घुसते जा रहे हैं। इस दिवाली पर सार्वदेशिक सभा को सभी सम्पत्तियों की रक्षा के लिए एक टीम बनानी चाहिए। यही महर्षि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है

ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है, यह बात बहुत ही प्रचलित है। वास्तव में यह स्पष्ट है कि परमात्मा के द्वारा जो भी इस चराचर जगत में जो भी किया जाता है वह अच्छा ही होता है। कई बार हम लोग परमात्मा के द्वारा किये गये कार्यों पर प्रश्न चिन्ह लगा देते हैं, लेकिन ऐसा सोचना और कहना दोनों ही गलत हैं क्योंकि परमात्मा हमारा पिताओं का पिता है और हम उसकी संतान हैं।

यदि हम उसकी संतान हैं तो कोई भी पिता अपनी संतान के साथ कुछ भी गलत नहीं कर सकता है। तो हमें उस प्रभु पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए और उसकी भक्ति और उपासना में मन को लगाना चाहिए। एक उदाहरण आता है- कि वन में एक दिन नदी के किनारे एक हिरन पानी पीने गया! उसने पानी पीते समय अपनी परछाईं को देखा तो उसने अपने सुंदर शरीर को देखकर परमात्मा का धन्यवाद किया लेकिन जब उसकी नजर अपने पैरों पर पड़ी तो अपनी पतली और लम्बी टांगों को देखकर अच्छा नहीं लगा और उसने प्रभु को दोष देना आरम्भ किया कि प्रभु तुमने मुझे बहुत ही सुंदर शरीर दिया। लेकिन ये मेरे पैर आपने सुंदर क्यों नहीं बनाये।

वह ऐसा सोच ही रहा था कि कुछ शिकारी कुत्तों की आवाज सुनाई दी। कुत्तों को अपनी ओर आता देख उसने अपनी लम्बी और पतली टांगों से दौड़कर अपनी जान बचाई। फिर उसने प्रभु का धन्यवाद किया और बोला यदि आपने मुझे लम्बी और पतली टांगें न दी होती तो शिकारी कुत्ते मुझे खा जाते।

इसलिए हम सभी को परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए और जीवन में उसे कभी भी दोष नहीं देना चाहिए क्योंकि वह हमारा पिताओं का पिता है। वही समस्त संसार को बानने वाला है। उसी की कृपा से समस्त जगत के प्राणी आनन्दपूर्वक जीवन जीते हैं और आनंद प्राप्त करते हैं। आर्य समाज के दूसरे नियम में परमात्मा के समस्त गुणों को दर्शाया गया है।

ईश्वर सच्चिदास्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है। इसलिए हम सभी को परमात्मा की भक्ति में लीन रहकर सच्चे वेद मार्ग पर चलकर अपने जीवन को उत्तम और सरल बनाना चाहिए। परमात्मा ने मनुष्य के लिए अमूल्य रत्नों और पृथ्वी को उत्पन्न किया है-

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत
ततो रात्र्यजायता ततः समुद्रो अ.वि.।।

ऋग्वेद १०-११०-१

ईश्वर ने अपने ज्ञानमय अनन्त सामर्थ्य से सब विधाओं के अक्षय वेदों और कार्य रूप प्रकृति को प्रकट किया। उसी परमेश्वर के अनन्त सामर्थ्य से प्रलयरूपी रात्रि उत्पन्न हुई और उसी परमेश्वर के ज्ञानमय सामर्थ्य से पृथ्वी और माघमण्डलस्य समुद्र उत्पन्न हुआ। समुद्र के साथ-साथ संवत्सर, मुहुर्त, प्रहर आदि काल उत्पन्न हुआ। सभी को वश में रखने, उसी ज्ञानमय प्रभु ने सहज स्वभाव से रात्रि, घटिका, कल तथा सूर्य, चन्द्रमा आदि सभी लोकों को बनाया। वह परमात्मा ही हमारा गुरु, आचार्य राजा है। हम सभी को परमात्मा की भक्ति में मन लगाना चाहिए।

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा, यत्र देवा अमृतमान शानास्तृतीये धामन्नधयैरयन्तः।।

जो लोग परमात्मा की भक्ति में मन न लगाकर इधर-उधर भटकते हैं वे सदैव दुख को प्राप्त करते हैं। इसलिए हमें नित्य पवित्र मन से परमात्मा की भक्ति कर जीवन को पवित्र बनाना चाहिए।

ज्योति पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा समस्त जनों को दीपावली के पुनीत पर्व पर हर प्रकार की सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति की कामना से परिपूर्ण बधाई व शुभकामनाएं।

दीपावली के दिन ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण समस्त आर्यों के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग की सर्वोच्च प्रेरणा बने, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

- प्रबंध संपादक

मानव कल्याण के स्वर्णिम सूत्र

19वीं शताब्दी के मानवतावादी महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद विद्या के अनुपम जानकार थे। विश्व कल्याण की भावना से उन्होंने 1875 में बम्बई महानगर में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज अपने जन्मकाल से ही समाज सुधार के सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी कार्य करता रहा है। राजनैतिक पराधीनता, धार्मिक अंधविश्वासों और सभी प्रकार की सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आर्य समाज ने बहुत बड़े स्तर पर काम किया है। छुआछूत के भेदभाव को मिटाने और स्त्री शिक्षा से लेकर तथाकथित शूद्रों को सामाजिक व धार्मिक अधिकार दिलाने के लिए आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने अमानवीय क्रूर यातनाएं सहन की हैं।

समाज में व्याप्त ऐसी कुप्रथाएं कभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं होती। सत्य धर्म और वेदविद्या के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता हर युग में बनी ही रहती है। समाज-हित की भावना से विचारशील सज्जन ऐसे घातक दोषों व दुराचारों के विरुद्ध संघर्ष करते ही रहते हैं। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करने, सत्य को स्वीकार करने-कराने और असत्य को छोड़ने-छुड़वाने का संकल्प लेकर आर्य समाज आज भी धार्मिक अंधविश्वासों व सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध अपनी प्रबल आवाज उठाता रहता है। आर्य समाज अपनी जिन मूलभूत मान्यताओं व व्यावहारिक शिक्षाओं को लेकर समाज सुधार का कार्य कर रहा है, वे निम्नलिखित हैं। इन मान्यताओं को आपके सामने रखते हुए आर्य समाज अपने विश्वकल्याण के मानवीय अभियान में आप का सक्रिय सहयोग व समर्थन चाहता है।

ईश्वर : ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, निर्विकार, सर्वव्यापक, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर और सृष्टिकर्ता आदि गुणों से युक्त है। एकमात्र उसी की उपासना करनी चाहिए। ईश्वर कभी सुअर, कच्छप, मछली व मनुष्य आदि का शरीर धारण कर अवतार नहीं लेता, इसलिए उसकी मूर्ति नहीं हो सकती। ईश्वर के स्थान पर कल्पित देवी-देवताओं एवं ऐतिहासिक महापुरुषों की मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा करना, उन्हें खिलाना-पिलाना, झूला-झुलाना, पंखे झलना, धूप-दीप दिखाना तथा सुलाना-जगाना अंधविश्वास एवं अवैज्ञानिक हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों तत्व अनादि हैं। शंकराचार्य का जीव ब्रह्म एकता का सिद्धांत तर्कहीन है। यदि हम ही ब्रह्म है तो उपासना किसकी ? हमें अज्ञान और दु:ख कहां से आया और दु:ख में आश्रय किसका।

वेद : वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है, इसलिए वेद की समस्त शिक्षाएं व्यावहारिक, वैज्ञानिक एवं सृष्टि नियमों के अनुकूल हैं। अत: वेद स्वत: प्रमाण हैं। संसार के सभी स्त्री-पुरुषों को समान रूप से वेद पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार है। मध्यकालीन पौराणिक ग्रन्थों एवं परम्परा में स्त्री और शूद को वेदाध्ययन से वंचित करना हमारे सामाजिक पतन का मूल कारण है। आज भी कुछ शंकराचार्य एवं धर्माचार्य ऐसी आवाज रह-रहकर उठाते हैं, उनको इसका उचित उत्तर दिया जाता रहा है और आगे भी दिया जाना चाहिए।

मध्यकालीन वेद भाष्यकारों-उव्वट, महीधर और सायण आदि द्वारा वेद मंत्रों का पशुहिंसा, श्राद्ध और अश्लीलता परक व्याख्यान तथा पाश्चात्य भाष्यकारों द्वारा वेद को गडरियों के गीत बताना एवं उनमें लौकिक इतिहास सिद्ध करना दुराग्रह मात्र है, इसमें कोई सच्चाई नहीं।

पंचमहायज्ञ : प्रत्येक गृहस्थ को यथा सम्भव प्रतिदिन निम्न पांच यज्ञ, उत्तम कार्य करने चाहिए- ब्रह्मयज्ञ- अर्थात् निराकार ईश्वर के गुणों का ध्यान करते हुए वेदशास्त्रादि का स्वाध्याय व संध्योपासना। देवयज्ञ (हवन) अर्थात् देवपूजा, संगतिकरण एवं दान। पितृयज्ञ- अर्थात् माता-पिता, आचार्यों की श्रद्धापूर्वक सेवा-सत्कार। अतिथि यज्ञ- सदाचारी, परोपकारी, धर्मात्मा विद्वानों की सेवा व सहयोग के साथ उनसे सत्योपदेश प्राप्त करना। बलिवैश्वदेव यज्ञ- अर्थात् पशु पक्षियों के लिए अन्न-पानी का प्रबंध।

गुरु और गुरुडम : जीवन को संस्कारित करने में गुरु का महत्वपूर्ण स्थान है। अत: गुरु के प्रति श्रद्धाभाव रखना उचित है। लेकिन गुरु को अलौकिक, दिव्य शक्ति से युक्त मानकर उससे नामदान लेना, उसे भगवान या उसका विशेष दूत मानकर उसकी या उसके चित्र की पूजा करना, उसके दर्शन या गुरुनाम का कीर्तन करने मात्र से सब

दुखों और पापों से मुक्ति मानना आदि गुरुडम की विषबेल है, अत: इसका परित्याग करना चाहिए।

चमत्कार : दुनिया में चमत्कार कुछ भी नहीं है। हाथ घुमाकर चेन, लॉकेट बनाना एवं भभूति देकर रोगों को ठीक करने का दावा करने वाले क्या उसी चमत्कार से रेल के इंजन, बड़े-बड़े भवन बना सकते हैं? या कैंसर, हृदय तथा मस्तिष्क के रोगों को बिना आपरेशन ठीक कर सकते हैं? यदि वे ऐसा कर सकते हैं, तो उन्होंने अपने आश्रमों में इन रोगों के उपचार के लिए बड़े-बड़े अस्पताल क्यों बना रखे हैं? वे अपनी चमत्कार विद्या से देश के करोड़ों अभावग्रस्त लोगों के दु:ख-दर्द दूर क्यों नहीं कर देते? असल में चमत्कार एक मदारीपना है, जो धर्म की आड़ में जनता के शोषण का घटिया तरीका है।

धर्म : धर्म वृत्तिमूलक-आचरण परक है। दस गुणों धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय (चोरी न करना), शौच (स्वच्छता), इन्द्रियनिग्रह, धी (विवेक युक्त बुद्धि), विद्या, सत्य एवं अक्राध से युक्त जीवन ही धार्मिक जीवन है। अपने पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कर्तव्यों का पालन करना धर्म है। केवल कर्मकांड अर्थात शंख, टल्ली, घंटे बजाना, व्रत उपवास करना, तिलक, कंठी धारण करना, माला जपना तथा पुण्य प्राप्ति के लिए तीर्थाटन, अथवा दिखावे के लिए संध्या-यज्ञ करना आदि का धर्म से कुछ भी लेना-देना नहीं है।

तीर्थ : जिससे दु:ख सागर से पार उतरें, अर्थात् जो सत्य बोलना, विद्या, योगाभ्यास, पुरुषार्थ और विद्यादान आदि शुभ कर्म है, वे ही तीर्थ हैं। सूर्यग्रहण या किसी अन्य खास अवसर पर हरिद्वार, प्रयाग, काशी, कुरुक्षेत्र आदि जाकर नदी या सरोवर में स्नानादि करने से अथवा कावड़ ले आने से व्यक्ति पापकर्मों से छूट जाएगा, ऐसा मानना घोर अज्ञान है।

कर्मफल : हर व्यक्ति को अपने किए शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। किसी भी प्रकार का कर्मकांड पापकर्मों के फल को परिवर्तित नहीं कर सकता, अत: इस भावना से किए या कराए जाने वाले सभी प्रकार के कर्मकाण्ड, अज्ञान, पाखंड, एवं ठगी के साधन हैं।

श्राद्ध : ईश्वरोपासना, स्वाध्याय एवं सदाचरण करते हुए जीवित माता-पिता, गुरुओं और वृद्धों की सेवा व सम्मान करना ही श्राद्ध है। मरे हुए लोगों के नाम पर ब्राह्मणों को भोजन करा-दान-दक्षिणा देना या स्थान विशेष पर जाकर पिण्डदान, गोदान आदि करने से पंडित जी तो सुखी बन सकते हैं, मृतकों की आत्माओं को कुछ नहीं मिलने वाला।

स्वर्ग-नरक : स्वर्ग-नरक कोई विशेष स्थान नहीं हैं। सुख विशेष का नाम स्वर्ग है और दु:ख विशेष का नाम नरक है, संसार में शरीर के साथ ही भोगे जाते हैं। स्वर्ग-नरक के संबंध में गढ़ी गई कहानियां केवल कुछ नाम के पंडितों के भरण-पोषण के लिए बनाई हैं।

मृतक-कर्म : मनुष्य की मृत्यु के बाद उसके मृत-शरीर का दाहकर्म करने के पश्चात अन्य कोई कार्य नहीं रह जाता। आत्मा की शांति या उद्धार के लिए करवाया जाने वाला गरुडपुराण आदि का पाठ या मंत्रजाप इत्यादि धर्म की आड़ लेकर अधार्मिक लोगों द्वारा किया जाने वाला प्रायोजित पाखण्ड है।

पूजा का अर्थ : जड़ पदार्थों का उचित रखरखाव व सदुपयोग ही उनकी पूजा है। तुलसी और पीपल आदि के वृक्ष ज्वर इत्यादि रोगों में लाभदायक हैं। अत: इनकी रक्षा होनी चाहिए। लेकिन इनकी परिक्रमा करके या सूत लपेटकर नमस्कार आदि करने में अपना कल्याण या पुण्य मानना अज्ञानता है, पूजा नहीं।

भक्ति : एकांत में बैठकर भगवत् चिंतन करते हुए उसकी दयालुता, न्यायकारिता आदि गुणों को जीवन में धारण कर पवित्र जीवन जीने का नाम ही भक्ति है। लाखों के पाण्डाल लगाकर फिल्मी धुनों पर स्त्री-पुरुषों को नचाना, झूम-झूमकर गाना, तालियां बजाकर कीर्तन करवाना भक्ति के नाम पर घटिया मनोरंजन है।

मुहूर्त : जिस समय चित्त प्रसन्न हो, मौसम अनुकूल हो, परिवार व पड़ोस में सुख शान्ति हो, वही शुभ मुहूर्त है। दशा देखकर पंडितों से विवाह, व्यवसाय आदि का मुहूर्त निकलवाना शिक्षित समाज का लक्षण नहीं है।

राशिफल एवं फलितज्योतिष : ग्रह और नक्षत्र जड़ हैं, और जड़ वस्तु का प्रभाव सभी पर एक जैसा पड़ता है। अत: ग्रह, नक्षत्र देखकर राशि निर्धारित करना एवं उन राशियों के आधार पर मनुष्य के विषय में भांति-भांति की भविष्यवाणियां करना नितांत अवैज्ञानिक है। जन्मपत्री देखकर वर-वधू का चयन न करके हमें गुण, कर्म, स्वभाव और चिकित्सकीय परीक्षण के आधार पर रिश्ता तय करना चाहिए। जन्मपत्रियों का मिलान करके जिनके विवाह हुए हैं, क्या वे दम्पति पूर्णत: सुखी हैं? विचार करें राम-रावण व कृष्ण-कंस की राशि एक ही थी।

जादू टोने : भूत-प्रेत, जादू-टोना, गंडे-ताबीज, यंत्र-मंत्र, झाड़फूंक यह सब दिन दहाड़े तथाकथित धार्मिक लोगों द्वारा चलाया जाने वाला ठगी का कारोबार है। ज्योतिषियों की सलाह से अनिष्ट निवारण के लिए किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान भी इसी कारोबार का विस्तार हैं।

महर्षि दयानन्द और दीपावली

डॉ. महेश विद्यालंकार, वैदिक प्रवक्ता

महापुरुषों की परम्परा में ऋषि दयानन्द की अलग पहचान और महत्व है। जैसे सभी पर्वतों में हिमालय की अलग विशेषता, आकर्षण तथा ऊंचाई है उसी प्रकार स्वामी दयानन्द का निराला व्यक्तित्व एवं कृतित्व था। अज्ञान, अंधकार, ढोंग, पाखंड आदि में डूबी मानव जाति के उद्धार के लिए और भारत माता के आंसू पोंछने के लिए वह निराला महापुरुष उनसठ वर्ष की अवधि के लिए संसार में आया था।

शिवरात्रि को आत्मबोध व सत्यबोध हुआ। फिर घर से सच्चे शिव एवं सत्य को पाने के लिए निकल पड़े तथा जीवन भर घर की ओर मुड़कर नहीं देखा। सम्पूर्ण जीवन देश, धर्म, संस्कृति, वेदोद्धार मानव उत्थान और कल्याण में लगा दिया, अपने लिए न कुछ चाहा, न मांगा, न संग्रह किया और न कोई चेला व चेली बनाई, न कोई मठ-मंदिर व गद्दी बनाई। ऋषि ने कोई धर्म, पंथ व नया सम्प्रदाय नहीं चलाया, वे सारा जीवन जहर पीते रहे, अपमान सहते रहे, गालियां और पत्थर खाते रहे तथा बदले में संसार को सीधा सच्चा एवं सरलमार्ग बताते रहे।

दीपावली से ऋषि दयानन्द के जीवन की अमर गाथा जुड़ी है। इसी दिन ऋषि ने अपना पंच भौतिक नश्वर शरीर छोड़ा था। एक दीप बुझा, किन्तु वे असंख्य लोगों को नवजीवन प्रकाश दे गए। ऐसा अद्भुत, विलक्षण, पुण्यात्मा, योगी, ऋषि, त्यागी, तपस्वी महापुरुष इतिहास में दुर्लभ है। यह दीपावली उन्हीं के उपकारों, योगदान और स्मृति का पर्व है। ऋषि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने तथा अश्रुपूरित होकर उन्हें नम्र श्रद्धांजलि देने का निर्वाणोत्सव है। वह युगपुरुष संसार में जो सत्य, धर्म व वेद की ज्योति जला गये है। वह युगों तक संसार को संमार्ग दिखाती रहेगी।

वे सत्य के शोधक, सत्यवक्ता, सत्यप्रचारक अंत में सत्य पर ही शहीद हो गए। उन्होंने गलत बातों के साथ कभी समझौता नहीं किया, यदि ढोंग, पाखंड, गुरुडम, पुजापे-चढ़ावे आदि के साथ समझौता किया होता तो वे उन्नीसवीं सदी के सबसे बड़े भगवान् होते, उनके कट्टर विरोधी भी अंदर से उनके प्रशंसक थे। स्वामी जी का जीवन मन-वचन तथा कर्म से एक जैसा था, उनके सम्पर्क में जो आया, जिसने उन्हें देखा, सुना एवं पढ़ा उसी का कायाकल्प हो गया न जाने कितने गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, हंसराज, अमीचन्द आदि के जीवन संत तथा परोपकारी बन गए।

इतना जबरदस्त चुम्बकीय आकर्षण एवं जादुई शक्ति और किसी महापुरुष में नजर नहीं आता है, लोग तलवार लेकर आए शिष्य बनकर गए, जिधर से निकले उधर ही ढोंग-अज्ञान, पाखंड मिटाते चले। वह सत्य का पुजारी, निर्भीक संन्यासी संसार में बुराईयों के विरुद्ध अकेले लड़ा, विजयी हुआ, उन्हें अनेक बार जहर दिया गया, वे बदले में जगत को अमृत देते रहे। गालियां देने वाले को फल व मिठाइयां भिजवाते थे, कई जगह पत्थरों की वर्षा हुई, वे इसे फूलों की वर्षा मानते थे, 'अपने विषदाता जगन्नाथ को प्राणदान दिया' दुनिया के इतिहास में ऐसा उदाहरण दूसरा न मिलेगा। विषदाता जगन्नाथ को क्षमाकर, रुपये देकर भाग जाने की सलाह देने वाला महायोगी, पुण्यात्मा ऋषि दयानन्द ही थे। स्वामी जी के जीवन की अनेक घटनाएं और बाते हैं, जिससे हम बहुत कुछ शिक्षा, प्रेरणा, मार्गदर्शन और आदर्श प्राप्त कर सकते हैं। उनका जीवन भी प्रेरक था और मृत्यु भी प्रेरक बनी। जाते-जाते भी नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बनाकर वैदिक धर्म का दीवाना बना गए।

घनघोर अमावस्या की रात में संसार को ज्ञान तथा प्रकाश की दीपावली देकर, ऋषि का जीवन भी निराला था, उनकी दीवाली भी निराली थी। संसार के इतिहास में ऐसा अनोखा व्यक्ति नहीं मिलेगा, जो होश में तारीख पूछकर, प्रभु को धन्यवाद करके, प्रार्थना करते हुए, हंसते-मुस्कुराते हुए जिसने शरीर छोड़ा हो, वह ऋषि दयानन्द थे, वे मृत्यु के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ गए, उनकी मृत्यु

दीपावली से ऋषि दयानन्द के जीवन की अमर गाथा जुड़ी है। इसी दिन ऋषि ने अपना पंच भौतिक नश्वर शरीर छोड़ा था। एक दीप बुझा, किन्तु वे असंख्य लोगों को नवजीवन प्रकाश दे गए। ऐसा अद्भुत, विलक्षण, पुण्यात्मा, योगी, ऋषि, त्यागी, तपस्वी महापुरुष इतिहास में दुर्लभ है। यह दीपावली उन्हीं के उपकारों, योगदान और स्मृति का पर्व है। ऋषि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने तथा अश्रुपूरित होकर उन्हें नम्र श्रद्धांजलि देने का निर्वाणोत्सव है।

सुखांत थी 'क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण जीवन प्रभु की इच्छा पूर्ण हो' में लगा दिया था। 'ऐसे महापुरुष की स्मृति का पर्व है दीपावली' जिसे हमने हाल ही में मनाया है। आर्य समाज ऋषि दयानन्द का जीवंत स्मारक है, ऋषि के अधूरे विचारों, सिद्धान्तों आदर्श आदि का प्रचारक एवं प्रसारक आर्य समाज है। आर्य समाज के अतीत का इतिहास तप-त्याग, बलिदान, सेवा, निमार्ण सुधार आदि कार्यों से भरा हुआ है। आर्य समाज के क्रांतिकारी विचारों, कार्यों, वैज्ञानिक चिंतन, सत्यमूलक सिद्धांतों आदि ने जीवन व जगत् को बड़ी दूर तक प्रभावित किया। आर्य समाज ने एक प्रकार से चौकीदार की भूमिका निभाई, जागते रहों।

ऋषि दयानन्द हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किले की दीवार बनकर खड़े हो गए, उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से हिन्दू धर्म का परिष्कृत, प्रेरक, व्यवहारिक तथा वैज्ञानिक स्वरूप संसार के सामने रखा, आर्य समाज के कार्यों की सबने सराहना की है। आर्य समाज के सिद्धांत, विचार, आदर्श तथा मान्यताएं सच्चे अर्थ में जीवन और जगत को सीधा, सच्चा एवं सरल मार्ग दिखा सकती हैं। परम्परागत प्रतिवर्ष दीपावली आती है, लोग मिलते हैं, भीड़ बिखर जाती है। हम अपना कर्तव्य पूरा समझ लेते है। जलसा, जुलूस, लंगर, फोटो, माला, भाषण आदि तक कार्यक्रम सीमित रह जाते हैं। महापुरुषों की जयंतियां, पर्व, स्मृति दिवस आदि हमें जगाने, संभालने व आत्मचिन्तन के लिए आते है। जिन उद्देश्यों, आदर्शों तथा सिद्धान्तों के लिए संस्था, संगठन व आर्य समाज बना था उस दिशा में चिंतन करना चाहिए। क्या खोया? क्या पाया? कहां के लिए चले थे? किधर जा रहे हैं, विवादों तथा स्वार्थों को छोड़ों, परस्पर मिलो, बैठो, सोंचो आर्य विचारधारा को कैसे आगे बढ़ायें-'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का उद्देश्य कैसे प्राप्त करें, संसार में तेजी से फैल रहें ढोंग, पाखंड, गुरुडम आदि को कैसे हटाया जाए? दीपावली अंतस में फैल रहे अंधकार को हटाने और मिटाने का संदेश लेकर आती है। दीवाली ऋषि दयानन्द को स्मरण करने का पर्व है, जो ऋषिवर ने सत्य सनातन वैदिक धर्म का मार्ग दिखाया था उससे हम भटक तो नहीं गए? जिन उद्देश्यों के लिए ऋषि ने आर्यसमाज बनाया था, उन सिद्धान्तों और विचारों के चिंतन की प्रेरणा देता है- ऋषि निर्वाणोत्सव जो हाल ही में मनाया गया है। आर्यों उठो! जागो! अपने स्वरूप, कर्तव्य तथा दायित्व को समझो तभी हम ऋषि को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि देने के हकदार हैं। ओ३म्!!

जीवन का उद्देश्य समझें!

यह देखा गया है कि मानव जन्म पाकर भी आम लोगों का अपने जीवन के प्रति न कोई लक्ष्य होता है और न मन में कोई उमंग होती है! कई लोग तो ऐसा भी कहते हैं-

इस दुनिया में खुशी का कोई निशां नहीं है!
रंज और गम से भरी है दुनिया परख के हमने देख ली है!!

भला बतलायें कि जो लोग मानव जीवन के बारे में ऐसा दृष्टिकोण अपना लेते हैं, उनके मन में जीने की उमंग कैसे उत्पन्न हो सकती है! आश्चर्य की बात है की कई लोग तो धार्मिक पुस्तकों की प्रतिदिन रट लगाते रहते हैं कि यह संसार मिथ्या है, दुखों का घर है, शरीर एक बोझ के समान है!

लेकिन कई शास्त्र यह भी बतलाते हैं कि यह मानव शरीर भगवान का मंदिर है, मानव चोला केवल भाग्यशाली लोगों को ही मिलता है, मानव जन्म को पाकर मनुष्य अपने परम पिता परमेश्वर से मिल सकता है! यदि यह बात है तो इस संसार को बुरा, मिथ्या और दुखों का घर क्यों कहा जाता है? भला जो लोग इस संसार को दुखों और क्लेशों का घर जानकर इससे भागना चाहते हैं। वह इस अनमोल जन्म से लाभ कैसे उठा सकते हैं? ऐसे लोग तो कदम-कदम पर मरते रहते हैं और अंत समय भी मायूसी की अवस्था में इस संसार से जाते हुए कह गए-

अब तो घबरा के कहते हैं कि मर जाएंगे!
मर कर भी चैन न पाया तो किधर जायेंगे!!

यदि प्रत्येक मनुष्य इस बात का पक्का इरादा कर ले कि मैं अपने आपको और दूसरे प्राणियों को खुश करने का पूरा-पूरा यत्न करूंगा! तो यह संसार जो बहुत से लोगों को दुखों का घर प्रतीत होता है, स्वर्ग के तुल्य बन सकता है!

रोने-धोने, नाराज, क्रोध और मायूस रहने वाले लोगों ने ही वास्तव में संसार को नर्क के समान बना रखा है! प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह कुछ भी काम धंधा करता हो! यदि वह अपना काम लगन, ईमानदारी और सच्चाई से करे तो वह स्वयं भी सदा सुखी रह सकता है और संसार को ठीक ढंग से चलाने में सहायता भी कर सकता है!!

आर्य देवेन्द्र गुप्ता, इंदिरापुरम, गाजियाबाद

मनुष्य की पूर्ण आत्मोन्नति वेदज्ञान और आचरण से ही सम्भव है

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

मनुष्य का शरीर जड़ प्रकृति से बना होता है जिसमें एक सनातन, शाश्वत, अनादि, नित्य चेतन सत्ता जिसे आत्मा के नाम से जाना जाता है, निवास करती है। जीवात्मा को उसके पूर्वजन्मों के कर्मों का भोग कराने के लिये ही परमात्मा उसे जन्म व शरीर प्रदान करते हैं। शुभ व पुण्य कर्मों की अधिकता व पाप कर्मों की न्यूनता होने पर मनुष्य का जन्म मिलता है। यदि पाप कर्म अधिक हों तो मनुष्येतर पशु, पक्षी आदि नीच प्राणी योनियों में जीवात्मा का जन्म होता है। मनुष्य जन्म उभय योनि है जहां जीवात्मा पूर्व किये हुए कर्मों का फल भी भोक्ता है और नये कर्मों को करके आत्मा व जीवन की उन्नति भी करता है। शरीर की उन्नति तो शरीर को स्वस्थ व बलवान बनाने से होती है तथा आत्मा की उन्नति आत्मा की सामर्थ्य के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने व उसका आचरण करने से होती है।

जिस सद्ज्ञान से आत्मा की उन्नति होती है, वह प्राप्त कहां से होता है? इसका उत्तर है कि आत्मा की उन्नति के लिए आवश्यक ज्ञान वेद व वेदानुकूल ऋषियों के ग्रंथों से मिलता है। वेदों से ही विदित होता है कि यह संसार एक अनादि, नित्य, सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, अजन्मा, अजर, अमर सत्ता 'परमात्मा' की कृति है। परमात्मा ने ही इस समस्त अपौरुषेय कार्य जगत को बनाया है। वही इस सृष्टि को चला रहा वा पालन कर रहा है।

परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी सत्ता इस ब्रह्माण्ड में नहीं है जो सृष्टि की रचना वा उत्पत्ति, इसका पालन व इसकी प्रलय कर सके। ईश्वर इस सृष्टि का निमित्त कारण है तथा अनादि व नित्य त्रिगुणात्मक सूक्ष्म प्रकृति इस कार्य जगत का उपादान कारण है। तीसरी अनादि व नित्य सत्ता जीवात्मा है। जीवात्माओं को संख्या की दृष्टि से अनंत कह सकते हैं।

अनंत का अर्थ जिसकी गणना अल्पज्ञ मनुष्य नहीं कर सकते परंतु परमात्मा के ज्ञान की दृष्टि से जीवात्माओं की संख्या अनंत न होकर गण्य व सीमित होती है। इस प्रकार परमात्मा अनादि जीवों को उनके पूर्वजन्म व पूर्व सृष्टि में उनके कर्मों का सुख व दुःख रूपी फल देने के लिये जीवों को जन्म देते हैं जिनका वह भोग नहीं कर पाये होते हैं। यह क्रम ही अनादि काल से चल रहा है जो सदैव चलता रहेगा अर्थात इस सृष्टिक्रम का अंत कभी नहीं होगा। इसीलिए सृष्टि को प्रवाह से अनादि कहा जाता है। सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय भी अनादि है। हम समय का विचार कर कितना भी पीछे की ओर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि करोड़ो, अरब, खरब व नील वर्षों व उससे भी अनंत काल पहले इस सृष्टि का वर्तमान सृष्टि के समान अस्तित्व था। सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय का क्रम

जीवात्मा को उसके पूर्वजन्मों के कर्मों का भोग कराने के लिये ही परमात्मा उसे जन्म व शरीर प्रदान करते हैं। शुभ व पुण्य कर्मों की अधिकता व पाप कर्मों की न्यूनता होने पर मनुष्य का जन्म मिलता है। यदि पाप कर्म अधिक हों तो मनुष्येतर पशु, पक्षी आदि नीच प्राणी योनियों में जीवात्मा का जन्म होता है। मनुष्य जन्म उभय योनि है जहां जीवात्मा पूर्व किये हुए कर्मों का फल भी भोक्ता है और नये कर्मों को करके आत्मा व जीवन की उन्नति भी करता है। शरीर की उन्नति तो शरीर को स्वस्थ व बलवान बनाने से होती है तथा आत्मा की उन्नति आत्मा की सामर्थ्य के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने व उसका आचरण करने से होती है। जिस सद्ज्ञान से आत्मा की उन्नति होती है, वह प्राप्त कहां से होता है? इसका उत्तर है कि आत्मा की उन्नति के लिए आवश्यक ज्ञान वेद व वेदानुकूल ऋषियों के ग्रंथों से मिलता है। वेदों से ही विदित होता है कि यह संसार एक अनादि, नित्य, सच्चिदानन्द स्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, अजन्मा, अजर, अमर सत्ता 'परमात्मा' की कृति है। परमात्मा ने ही इस समस्त अपौरुषेय कार्य जगत को बनाया है। वही इस सृष्टि को चला रहा वा पालन कर रहा है।

चलता रहता है। वह अनादि काल से चला आ रहा है। इस नाशवान व परिवर्तनशील सृष्टि को देखकर तथा जीवात्मा के जन्म व मृत्यु का विचार करने पर मनुष्य को वैराग्य होता है। वह विचार करने पर जान लेता है कि उसका जीवन आदि व अन्त से युक्त है।

मनुष्य की आयु प्राय: एक सौ वर्ष से कम होती है। उसे इस अवधि में भी कभी किसी रोग, दुर्घटना एवं अन्य कारणों से मृत्यु का ग्रास बनना पड़ जाता है। हम कल जीवित रहेंगे या नहीं, किसी को पता नहीं अर्थात निश्चित नहीं है। अत: सुख भोग का विचार त्याग कर आत्मा व परमात्मा को जानने व जन्म-मरण से बचने के उपाय करना ही मनुष्य का कर्तव्य निश्चित होता है। यह बात और है कि प्राय: सभी मनुष्य अपने इस कर्तव्य की उपेक्षा करते हैं तथापि कुछ पुण्य आत्माएं समय-समय पर उत्पन्न होती हैं जो सुख व भोग से युक्त जीवन का त्याग व उस पर नियंत्रण कर तप, त्याग व साधना का जीवन व्यतीत करते हुए ईश्वरोपासना आदि साधनों से ईश्वर साक्षात्कार के प्रयत्न कर जन्म व मरणरूपी दु:खों से मुक्ति का प्रयत्न करती हैं।

दु:खों की सर्वथा निवृत्ति एवं सुख व आनंद की प्राप्ति के लिये मनुष्य को सद्ज्ञान की आवश्यकता होती है। बिना सद्ज्ञान के मनुष्य की आत्मा की उन्नति व आत्मा के लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति होना असम्भव है। यह सद्ज्ञान हमें परमात्मा से प्राप्त होता है। साधना द्वारा अपनी आत्मा को परमात्मा में लगाने, उसके गुणों का ध्यान करने तथा उसमें एकाकार होने पर हमें परमात्मा का साक्षात्कार होना सम्भव होता है। इसके लिये ऋषि पतंजलि जी ने योगदर्शन ग्रंथ लिखा है। इसका अध्ययन व योग्य गुरुओं से उसका प्रशिक्षण लेकर यम, निमय, आसन, प्राणायाम, धारणा व ध्यान की विधि को जानकर व उसे आचरण द्वारा साध कर आत्मा व शरीर की उन्नति की जाती है।

परमात्मा के सत्यस्वरूप का ज्ञान भी आत्मा की उन्नति में अनिवार्य है। ईश्वर के सत्यस्वरूप का ज्ञान ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेदों से ही प्राप्त होता है। वेदों के आधार पर ही ऋषियों ने उपनिषदों, दर्शनों, मनुस्मृति व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रंथों की रचना की है। इनके अध्ययन से भी ईश्वर व जीवात्मा सहित अनेक विषयों का ज्ञान होता है। अत: मनुष्य को वेदादि समस्त वेदानुकूल उपलब्ध साहित्य का अध्ययन कर अपना ज्ञान बढ़ाना चाहिये और सत्य ज्ञान के अनुरूप ही अपने आचरणों को करना चाहिये। ईश्वर व आत्मा का ज्ञान हो जाने पर यह विदित हो जाता है कि हमें ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में धारण करना व उनका पोषण करना है। ईश्वर के गुणों को धारण कर उसके अनुरूप आचरण करना ही साधना है। साधना में ईश्वर की भक्ति का मुख्य स्थान है। इसके लिये वेद आदि सत्साहित्य के स्वाध्याय सहित ईश्वर के ध्यान की साधना करते हुए समाधि को प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। सृष्टि के आरम्भ से हमारे ज्ञानी पूर्वज इसी कार्य को करते आये हैं।

आधुनिक काल में भी अनेक महापुरुषों यथा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी आदि ने ईश्वर व आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर ईश्वर के ध्यान द्वारा समाधि को प्राप्त किया था और वह जीवन के लक्ष्य ईश्वर साक्षात्कार को करने में सफल हुए थे। ईश्वर का साक्षात्कार करना ही जीवात्मा का अंतिम लक्ष्य होता है। इसके बाद जीवनमुक्त अवस्था व्यतीत कर साधक मुमुक्षु को मोक्ष प्राप्त होकर उसका आत्मा सभी दु:खों से मुक्त हो जाता है और ईश्वर के सान्निध्य में आनंद को प्राप्त होकर सुदीर्घकाल तक आनंद का भोग करता है। मनुष्य की आत्मा की उन्नति करने व उसे समाधि, ईश्वर साक्षात्कार कराने सहित ब्रह्मलोक व मोक्ष तक पहुंचाना ही हमारे समस्त वेदादि साहित्य का उद्देश्य है। ➲➲

अनमोल वचन

- मैं उस प्रचण्ड अग्नि को देख रहा हूं जो संसार की समस्त बुराइयों को जलाती हुई आगे बढ़ रही है। वह आर्य समाज रूपी अग्नि जो स्वामी दयानन्द के हृदय से निकली और विश्व में फैल गयी।

  – **अमेरिकन पादरी एण्ड्यू जैक्सन**

- आर्य समाज दौड़ता रहेगा तो हिन्दू समाज चलता रहेगा। आर्य समाज चलता रहेगा, तो हिन्दू समाज बैठ जायेगा। आर्य समाज बैठ जायेगा तो हिन्दू समाज सो जायेगा। और यदि आर्य समाज सो गया तो हिन्दू समाज मर जायेगा।

  –पंडित मदन मोहन मालवीय

- स्वतंत्रता सेनानियों का एक मंदिर खड़ा किया जाय तो उसमें महर्षि दयानन्द मंदिर की चोटी पर सबसे ऊपर होगे। **–श्रीमती एनी बेसेन्ट**

संध्या आदि पंच सकारों के उद्घोषक महात्मा हंसराज

तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवास: कवत्नवे। ऋ. 7/32/9। अर्थात् विद्वान, ज्ञानी एवं पुरुषार्थी जन ही जीते व जीतते हैं, वे ही रहते हैं, वे ही पुष्ट होते हैं, वे ही दुर्गुणों से रहित होते है। वेद का यह संदेश मानभाजन महात्मा हंसराज जी के जीवन का भी अंग बना। आज महात्मा हंसराज जी की जयंती है। उनका जन्म 19 अप्रैल 1864 में बजवाड़ा होशियारपुर, पंजाब में हुआ। उनके पिता लाला चुनीलाल जी एवं माता गणेशी देवी थी। हंसराज जी के प्राथमिक शिक्षा उनके गांव में हुई। अग्रिम शिक्षा-दीक्षा लाहौर के मिशन हाई स्कूल एवं पंजाब यूनिवर्सिटी में हुई। 1885 में हंसराज जी ने बीए तक की शिक्षा पूर्ण कर ली।

महात्मा जी के जीवन का यह ऐसा अवसर था कि प्रेय मार्ग को अपना कर सरकारी नौकरी करके गृह का वैभव बढ़ाते। वैभव बढ़ाने की आवश्यकता भी थी क्योंकि फरवरी 1876 में उनके पिता लाला चुन्नीलाल जी दिवंगत हो चुके थे, जो अपील नवीस के सरकारी अदालत में कार्य कर गृह का भरण पोषण करते थे, वह सुविधा भी समाप्त हो चुके थी। पारिवारिक व्यवस्था हेतु, मात्र उनके बड़े भाई मुल्कराज ही सहारा थे।

गौरवशाली संकल्प : हंसराज जी जीवन का कुछ निर्णय लेते सरकारी नौकरी का प्रकल्प बनता इससे पूर्व ही हंसराज जी ने लाहौर आर्य समाज के लाला लाजपत राय, पं. गुरुदत्त एवं लाला शिवनाथ आदि आर्य युवक भाइयों के सानिध्य से आर्य समाज वैदिक धर्म, समाज सुधार आदि के विचारों से भी भली-भांति अपने को रंग लिया था। इतना ही नहीं 30 अक्टूबर 1883 में अजमेर नगर की भिनाय कोठी में राष्ट्र के सशक्त हितैषी, वेदोद्धारक, वेदभाष्यकार, संस्कृतिरक्षक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के भौतिक शरीर ने भी सदा-सदा के लिए राष्ट्र से विदा ले ली थी। उन महर्षि की स्मृति एवं उनके कार्य को आगे प्रसारित करने के लिए संस्कृत, वेदवेदांग, आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा के लिए दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल व कॉलेज की स्थापना हो, इस विचार का आर्य समाज लाहौर के पं गुरुदत्त एवं लाला जीवनदास आदि ने ८ नवम्बर 1883 को सर्व सम्मति निर्णय भी ले लिया था। स्कूल, कॉलेज के निर्माण के लिए धन इकट्ठा किया जाने लगा।

डीएवी स्कूल, कॉलेजों में की स्थापना के क्षेत्र एवं उनके संचालन करने वाले व्यक्ति का निर्णय अभी शेष था। स्कूल, कॉलेजों की स्थापना का संकल्प करने वाले आर्यजनों का क्या निर्णय होता, यह तो नहीं कहा जा सकता। पर उनकी चिंता एवं दयानन्द का ऋण, शिक्षा की बिगड़ती दशा, समाज को विकृत करने वाली कुरीतियां आदि परिस्थितियों को देखते हुए पुरुषार्थी, साहसी, त्यागी, जन्मजात संन्यासी लाला हंसराज जी ने दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल, कॉलेजों की सेवा एवं शिक्षण के दायित्व का गौरवशाली संकल्प कर डाला।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा : लाला हंसराज जी ने डीएवी स्कूल व कॉलेज की सेवा का जो संकल्प लिया था, उसकी भी यह विशेषता थी कि बिना वेतन एवं बिना पारिश्रमिक के सेवा करूंगा। 3 नवम्बर 1885 को अपने निर्णय का पत्र महात्मा हंसराज जी ने लाहौर आर्य समाज की अंतरंग सभा को दे दिया। यद्यपि महात्मा हंसराज जी के इस निर्णय से उनके पारिवारिक जनों को लाभ नहीं था, परंतु समाज, देश का लाभ बहुत था । हंसराज जी ने बड़ी दृढ़ता के साथ श्रेय मार्ग अपना लिया। 1 जून 1886 को दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल का प्रारम्भ हुआ, जिनके संचालन संरक्षण का दायित्व महात्मा हंसराज जी को दिया गया, प्रथम प्रिंसीपल भी वे ही बने। उन्होंने इन संस्थानों की अवैतनिक सेवा 25 वर्ष तक की। 25 वर्ष पश्चात् 1911 में डीएवी स्कूल व कॉलेज की स्थापना की रजत जयंती मनायी गई, उस समय उन्होंने अपने प्राचार्य पद के त्याग का संकल्प भी ले लिया। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:, यजु. 40/1, इस वेदाज्ञा को शिरोधार्य कर पद त्याग दिया।

शिष्ट पंक्ति के व्यक्ति : महात्मा हंसराज ने जिस समय डीएवी की सेवा का संकल्प लिया, उस समय उनकी अवस्था 22 वर्ष की थी। कालांतर में परिवार बसा, परिवार में स्वयं, पत्नी, दो पुत्र, तीन पुत्रियां एवं माता सब आठ सदस्य थे। उनके संसाधनों की व्यवस्था का दायित्व था, इधर अवैतनिक सेवा का संकल्प, दोनों का सामंजस्य उनके बड़े भाई मुल्कराज जी ने बनाया। हंसराज जी ने डीएबी से तो कभी भी आजीवन द्रव्य नहीं लिया। प्रतिमास अनेक प्राध्यापकों को हजारों रुपये दिये, किन्तु स्वयं एक पैसा भी न लिया। बड़े भाई मुल्कराज जी ने प्रतिमास 40 रुपये देकर उनके संकल्प को दृढ़ बनाया। भाई की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र बलराज ने वित्त का प्रबंध किया। भाई द्वारा प्रदत्त 40 रुपये की आय के द्वारा ही उन्होंने अपने परिवार की व्यवस्था की। त्यागी, तपस्वी, मितव्ययी जनों को आर्यावर्त में शिष्ट कहा जाता रहा है।

जननी जन्मभूमिश्च...

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

अस्मिन् संसारे जनन्याः जन्मभूमेश्च सुखं विस्मरणीयं विद्यते। यत्परमं सुखं जनन्याः क्रोडे प्राप्यते, तत्स्वर्गेऽपि दुर्लभं भवति। धूलिना धूसरितं शिशुं स्नेहेन क्रोडे कृत्वा माता एव दुग्धं पाययति। तं कष्टे विलोक्य सा तद्दुःखेन दुःखिता सकलोपतापं कद्रानि वारणाय कल्पते। माता उत्पत्तिपूर्वादेव शिशुं स्वगर्भे पोषयति, स्वयं च कष्टमनुभवन्त्यपि मोदं वहति। जननान्तरं यावत् जीवनं स्ववत्सं भोजनादिना पोषयति हितं च साधयति। अत एव भगवता रामभद्रेण उत्तररामचरिते जनन्याः स्नेहं स्मरता उक्तं यत् शैशवदिनानि कथं व्यतीतानि इति वयं तु न स्मरामः यतो हि–

जीवत्सु तात पादेषु नूतने दारसङ्ग्रहे।
मातृभिश्चिन्त्यमानानां ते हि नो दिवसा गताः॥ इति

माता शिशोः प्रसवे यत् कष्टं सहते, तत् कष्टं अनुमातुमपि न शक्यते। नवमासपर्यन्तं स्वोदरे वहन्ती अतिकष्टमनुभवन्ती माता मनागति विमना न भवति। तस्य कष्टस्य निष्कृतिं पुरुषैः कोटिजन्मनि अपि कर्तुं न शक्यते। उक्तश्च–

यं मातापितरौ क्लेशं सहेते सम्भवे तृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि॥ इति

भारतीय संस्कृतौ त्रयः गुरवः पूज्या वर्तन्ते–माता, पिता, आचार्यश्येति। तेषु माता एव सर्वाशियेन ज्येष्ठा श्लाघ्या तिष्ठति। पिता तु बालकास्य जीवनं लालनात् पोषणात् तं सर्वविधं रक्षति। अतः तस्याः महत्वां सर्वाधिकं विद्यते। उक्तश्च–

उपाध्यायाद्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते॥ इति

अस्माकं शास्त्रेषु पञ्चजकाराः दुर्लभाः प्रोक्ताः। तेषु जननी जन्मभूमिः जनकश्चेति त्रयोऽपि सन्ति। धनादिकं क्षयं जाते पुनरपि लभ्यते, किंतु जनकः जननी गुरवश्च नष्टे सति पुनः केनापि प्रयत्नेन न लभ्यन्ते। अत प्रोक्तम्–

जननी जन्मभूमिश्च जाह्नवी च जनार्दनः।
जनकः पश्चमश्चेव जकाराः पश्च दुर्लभाः॥ इति

अस्मिन् संसारे यावन्तोऽपि महापुरुषः अभूवन्, ते मातृपितृभक्ता आसन्। महात्मागान्धि–नैपोलियन–अशोक–श्रीमच्छसंकराचार्य–प्रभृतयः मातृभक्ताः संसारे ख्याताः। जननीव जन्मभूमिरपि श्लाघ्या भवति। मानवो यत्र जन्म लभते, तत्स्थानं देशः वा जन्मभूमि। यत्सुखं जनन्याः क्रोडे प्राप्यते, तदेव सुखं जन्मभूमौ क्राडने वसनेऽपि नरः लभ्यते। बालसखाभिः स्वबन्धुभिः स्वातन्त्र्येण सुखमनुभवन् कः पुमान् आत्मानं धन्यं न मन्येत्। ईदृशं सुखं स्वर्गेऽपि सुदुर्लभं भवति। अतः एव भगवता रामभद्रेणोक्तम्–

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्णापति गरीयसी॥ इति

अस्माकं राष्ट्रस्येतिहासे राष्ट्रभक्तानां मातृभूमिरक्षकाणां वीराणाश्च महतो परम्परा विद्यते। इमे वीराः भक्ताः स्वजनन्याः जन्मभूमेश्च दुःखवारणाय स्वसर्वस्वं त्वक्त्वा प्राणपणेन देशरक्षामकुर्वन्। एषां जन्मभूमिभक्तानां ख्यातिना देवाः मुग्धाः सन्तः पुनः भारते जन्मग्रहणं कर्तुमिच्छन्ति, अत्रत्यानां जनानां यशः गायन्ति च। अतः साधुरेवोक्तम्–

'जननी जन्मभूमिश्च स्वार्गादपि गरीयसी।' ○○

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **सदाचार :** जो सृष्टि से लेके आज पर्यंत सत्पुरुषों का वेदोक्त आचार चला आया है कि जिसमें सत्य का ही आचरण और असत्य का परित्याग किया है, उसको 'सदाचार' कहते हैं।
- **विद्यापुस्तक :** जो ईश्वरोक्त, सनातन, सत्यविद्यामय चार वेद हैं, उनको 'विद्यापुस्तक' कहते हैं।
- **आचार्य :** जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण कराके सब विद्याओं को पढ़ा देवे, उसको 'आचार्य' कहते हैं।
- **गुरु :** जो वीर्यदान से लेके भोजनादि कराके पालन करता है, इससे पिता को 'गुरु' कहते हैं और जो अपने सत्योपदेश से हृदय के अज्ञान रूपी अंधकार मिटा देवे, उसको भी 'आचार्य' कहते हैं।

पं जवाहर लाल नेहरू

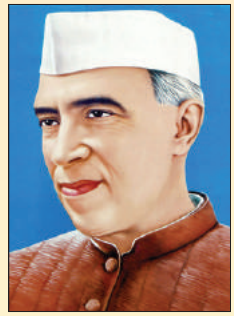

जन्म : 14 नवम्बर
शत्-शत् नमन

पं. जवाहरलाल नेहरू (नवंबर 14, 1889–मई 27, 1964) भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे और स्वतन्त्रता के पूर्व और पश्चात् की भारतीय राजनीति में केन्द्रीय व्यक्तित्व थे। महात्मा गांधी के संरक्षण में, वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सर्वोच्च नेता के रूप में उभरे और उन्होंने 1947 में भारत के एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापना से लेकर 1964 तक अपने निधन तक, भारत का शासन किया। वे आधुनिक भारतीय राष्ट्र-राज्य-एक सम्प्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, और लोकतांत्रिक गणतंत्र के वास्तुकार माने जाते हैं। कश्मीरी पंडित समुदाय के साथ उनके मूल की वजह से वे पंडित नेहरू भी बुलाए जाते थे, जबकि भारतीय बच्चे उन्हें चाचा नेहरू के रूप में जानते हैं। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री का पद संभालने के लिए कांग्रेस द्वारा नेहरू निर्वाचित हुए, गांधीजी ने नेहरू को उनके राजनीतिक वारिस और उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार किया। प्रधानमंत्री के रूप में, वे भारत के सपने को साकार करने के लिए चल पड़े। भारत का संविधान 1950 में अधिनियमित हुआ, जिसके बाद उन्होंने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधारों के एक महत्त्वाकांक्षी योजना की शुरुआत की। विदेश नीति में, भारत को दक्षिण एशिया में एक क्षेत्रीय नायक के रूप में प्रदर्शित करते हुए, उन्होंने गैर-निरपेक्ष आंदोलन में एक अग्रणी भूमिका निभाई। भारत में उनका जन्मदिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता हैं और बच्चों के वह चाचा नेहरू थे।

महात्मा हंसराज : आर्यसमाज के नेता एवं शिक्षाविद

स्मृति : 15 नवम्बर
शत्-शत् नमन

भारत में शिक्षा के प्रसार में डीएवी विद्यालयों का बहुत बड़ा योगदान है। विद्यालयों की इस श्रृंखला के संस्थापक हंसराज जी का जन्म महान संगीतकार बैजू बावरा के जन्म से प्रसिद्ध हुए ग्राम बैजवाड़ा, जिला होशियारपुर, पंजाब में 19 अप्रैल, 1864 को हुआ था। बचपन से ही शिक्षा के प्रति इनके मन में बहुत अनुराग था पर विद्यालय न होने के कारण हजारों बच्चे अनपढ़ रह जाते थे। वह शिक्षा के प्रसार के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे लेकिन उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी और जिम्मेदारी उनके ऊपर ही थी लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी उन्होंने 22 वर्ष की आयु में डीएवी स्कूल में प्रधानाचार्य के रूप में अवैतनिक सेवा आरंभ की जिसे वह 25 वर्षों तक करते रहे। महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त थे। लाला हंसराज अविभाजित भारत के पंजाब के आर्य समाज के एक प्रमुख नेता एवं शिक्षाविद् थे। पंजाब भर में दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालयों की स्थापना करने के कारण उनकी कीर्ती अमर है। देश, धर्म और आर्य समाज की सेवा करते हुए, 15 नवम्बर, 1936 को महात्मा हंसराज जी ने अंतिम सांस ली।

राजनेता स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय

बलिदान : 17 नवम्बर
शत्-शत् नमन

लाला लाजपत राय भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने वाले मुख्य क्रांतिकारियों में से एक थे। वह पंजाब केसरी (पंजाब का शेर) के नाम से विख्यात थे और कांग्रेस के गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चन्द्र पाल) में से एक थे। उन्होंने पंजाब नैशनल बैंक (पीएनबी) और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना भी की। लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को दुधिके गाँव में हुआ था जो वर्तमान में पंजाब के मोगा जिले में स्थित है। वह मुंशी राधा किशन आज़ाद और गुलाब देवी के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनके पिता बनिया जाति के अग्रवाल थे। बचपन से ही उनकी माँ ने उनको उच्च नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी थी। लाला लाजपत राय ने बहुत से क्रांतिकारियों को प्रभावित किया और उनमें एक थे शहीद भगत सिंह। सन् 1928 में साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन के दौरान हुए लाठी-चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये और 17 नवम्बर सन् 1928 को परलोक सिधार गए।

विचित्र व्यवहार

जो बात पूरे ध्यान से सुननी चाहिए, उसे तो लोग सुनते नहीं। जिस बात पर कम ध्यान देना चाहिए, उसे पूरे ध्यान से सुनते हैं। आप सोचेंगे, ऐसी क्या बात हो सकती है, जिसे पूरे ध्यान से सुनना चाहिए? ऐसी बहुत सी सच्ची और सुखदायक बातें होती हैं, जिन्हें पूरे ध्यान से सुनना चाहिए। जैसे कि विद्वानों के सुझाव। और ऐसी कौन सी बात है, जिसे सुनने में कम ध्यान देना चाहिए? वह है, आपकी प्रशंसा। जो अधिकतर धोखा देने वाली होती है। जीवन में अनेक कठिनाइयां आती रहती हैं। जब कोई कठिनाई आती है, कोई रोग, कोई दोष, कोई अन्याय की घटना, या कोई दु:ख इत्यादि जीवन में आ जाता है, तब व्यक्ति दूसरों की सलाह लेना चाहता है, और अपने उस दु:ख को दूर करना चाहता है।

उस समय उसकी मानसिकता अधिकतर ऐसी होती है, कि मुझे कुछ ज्यादा कष्ट न उठाना पड़े, परंतु मेरी समस्या हल हो जाए। यह बात प्राय: सभी लोग सोचते हैं। जबकि यह बात ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है। अगर किसी समस्या को दूर करना है, तो उसका जो भी वास्तविक उपाय है, वह तो करना ही होगा। चाहे सरल हो या कठिन। तो सरलता को प्राथमिकता न दें, वास्तविक उपाय को प्राथमिकता देवें। परंतु प्राय: लोग आलसी प्रमादी व कामचोर होते हैं। वे मेहनत तो करना नहीं चाहते और अपनी समस्या जरूर हल करना चाहते हैं। ऐसा नहीं हो सकता। यदि समस्याओं को हल करना है, तो उसके लिए ईश्वर का नियम है, कि आपको तपस्या तो करनी ही पड़ेगी। इसलिए जीवन में समस्याएं आने पर जो अलग-अलग क्षेत्रों के विद्वान होते हैं, वे आपकी समस्याओं को दूर करने के लिए बहुत उत्तम और सही सुझाव देते हैं।

यदि आप उन सुझावों को पूरे ध्यान से सुनें, और उनके अनुसार आचरण भी करें, तो निश्चित रूप से आपकी समस्याएं हल हो सकती हैं। परंतु ऐसा बहुत बार देखा जाता है, कि जो विद्वानों द्वारा हितकर सुझाव दिये जाते हैं, उन्हें भी लोग ध्यान से नहीं सुनते, और उन पर आचरण नहीं करते। इसलिए उनकी समस्याएं हल नहीं हो पाती। अब दूसरी बात यह है, कि जब कोई व्यक्ति आपकी प्रशंसा करता है, तो आप उसे पूरे ध्यान से सुनते हैं, उसमें पूरा सुख लेते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि आपके अंदर अभिमान उत्पन्न हो जाता है। 'कब अभिमान उत्पन्न हो गया' इस बात का भी पता नहीं चलता।

जिस व्यक्ति को इस बात का पता ही नहीं चलता, कि 'कब मुझ में अभिमान उत्पन्न हो गया है' वह उस अभिमान की लपेट में आकर अपनी बुद्धि को खो बैठता है। अर्थात अभिमान की स्थिति में उसकी बुद्धि ठीक काम नहीं करती। बस, अब समझ लीजिए, उसका पतन होना निश्चित है। अभिमान उत्पन्न होने पर, इसका परिणाम यह होता है कि वह अभिमानी व्यक्ति दूसरों के साथ दुर्व्यवहार एवं अन्याय करना आरम्भ कर देता है। इस प्रकार से वह व्यक्ति पतित हो जाता है। समाज में उसकी प्रतिष्ठा कम होने लगती है। लोगों की सहानुभूति और प्रेम उसके प्रति कम हो जाते हैं। धीरे-धीरे लोग उसे सहयोग देना भी कम कर देते हैं, या बंद ही कर देते हैं। इस प्रकार की अनेक अन्य हानियां भी, उस प्रशंसा को पूरे ध्यान से सुनने के कारण होती हैं।

इसलिए जब कोई व्यक्ति आपकी प्रशंसा करे, तब पहले तो उसे आधे अधूरे मन से सुनें। सुनकर उसका सुख न लेवें। फिर भी अपने गुणों पर अभिमान न करें। उन सब गुणों का श्रेय परमात्मा तथा अन्य माता पिता विद्वज्जनों को दे देवें। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आप अभिमान आदि दोषों से तथा दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करने से बच पाएंगे, अन्यथा नहीं। और यदि प्रशंसा सुनकर आप अभिमानी हो गए, तथा दूसरों के साथ आपने दुर्व्यवहार व अन्याय आचरण किया, तो ईश्वर का दण्ड याद रहे- पशु पक्षी, समुद्री जीव तथा वृक्षादि योनियों में पचासों प्रकार के दुख भोगने पड़ेंगे।

■■ **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक**

'गीता सुगीता कर्तव्य'

इस श्लोक का प्रमाण देकर यह घोषित करने का प्रयास करते हैं, कि केवल गीता ही पढ़नी चाहिए। दूसरे शास्त्रों का विस्तार पूर्वक अध्ययन ध्यान करने से भी कोई लाभ नहीं है। क्योंकि गीता तो स्वयं भगवान पद्मनाभ के कमल रूपी मुख से सृजित हुई है।

परंतु पौराणिक बंधुओं को यह नहीं भूलना चाहिए कि संसार में सबसे प्राचीन धर्म ग्रंथ वेद है,और वेद को पढ़ने से उसका अध्ययन करने से जितना परम लाभ मिलेगा उतना किसी अन्य ग्रंथ के पढ़ने से नहीं मिलेगा। वेदों की रचना का समय एक अरब 96 करोड़ 800000 53000 121वां वर्ष चल रहा है।

इसी प्रकार यदि हम उनकी बातों पर आकलन भी करें। तो पुराणों का समय मात्र 2022 वर्ष बैठता है। उससे पहले पुराणों का कोई अता पता नहीं है। तो इस प्रकार से हट और दुराग्रह करना यह अनुचित है और मनुष्यों में भ्रांति फैलाने वाला षड्यंत्र है। यह लिखना तो और भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि केवल गीता पढ़ने से ही लाभ मिलेगा अन्य दूसरे शास्त्रों को विस्तार पूर्वक पढ़ने से भी कोई लाभ नहीं है। यह मूर्खता के लक्षण है और हठधर्मिता है। जिस गीता की चर्चा अक्सर लोग किया करते हैं उस गीता को महर्षि वेदव्यास जी ने लिखा है और उन्होंने ही महाभारत भी लिखा है।

महाभारत के ही उद्योग पर्व और भीष्म पर्व से यह श्लोक चुनकर उन्हीं का नाम गीता है। गीता यजुर्वेद के 40 अध्याय के पहले दो मंत्रों पर आधारित है यानी कि उनका भाष्य है 'ईशावस्यम इदं सर्वं' और महाभारत में भी एक ही ईश्वर को स्वीकार किया गया है। महाभारत शांति पर्व में परमात्मा के अवतार अर्थात शरीर धारण करने का निषेध किया गया है; ऐसा उपदेश है कि 'हे विप्र! विद्वान मनीषी अपनी आत्मा में ही उस परमात्मा का विज्ञान द्वारा दर्शन अर्थात साक्षात्कार करता है, यह आत्मा चक्षुआदि इंद्रियों से देखने योग्य नहीं है अर्थात इंद्रिगम्य नहीं है, मन रूपी प्रदीपेन महान आत्मा के दर्शन किए जाते हैं। वह परमेश्वर शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध से रहित और अव्यय है वह समस्त शरीरों में व्याप्त है।

जिस गीता की चर्चा अक्सर लोग किया करते हैं उस गीता को महर्षि वेदव्यास जी ने लिखा है और उन्होंने ही महाभारत भी लिखा है। महाभारत के ही उद्योग पर्व और भीष्म पर्व से यह श्लोक चुनकर उन्हीं का नाम गीता है। गीता यजुर्वेद के 40 अध्याय के पहले दो मंत्रों पर आधारित है यानी कि उनका भाष्य है 'ईशावस्यम इदं सर्वं' और महाभारत में भी एक ही ईश्वर को स्वीकार किया गया है। महाभारत शांति पर्व में परमात्मा के अवतार अर्थात शरीर धारण करने का निषेध किया गया है; ऐसा उपदेश है कि 'हे विप्र! विद्वान मनीषी अपनी आत्मा में ही उस परमात्मा का विज्ञान द्वारा दर्शन अर्थात साक्षात्कार करता है, यह आत्मा चक्षुआदि इंद्रियों से देखने योग्य नहीं है अर्थात इंद्रीगम्य नहीं है, मन रूपी प्रदीपेन महान आत्मा के दर्शन किए जाते हैं।

■■ आचार्य करण सिंह, नोएडा

पञ्च देव पूजा

देव शब्द का अर्थ है देने वाला- ज्ञान देने वाला, भोजन देने वाला, प्रकाश देने वाला आदि। देवी, देवता शब्द देव के ही पर्यायवाची हैं। सूर्य, चंद्र, अग्नि, वायु, जल, पृथिवी आदि देवता जड़ हैं। जड़ वह पदार्थ होता है जिसे ज्ञान न हो। जड़ पदार्थ की पूजा का कोई मतलब नहीं बनता। हां, हवन-यज्ञ करके जल और वायु की शुद्धि करनी चाहिए जिससे सभी प्राणियों को सुख मिले।

पूजनीय देव पांच हैं- 1. माता- संतानों को तन, मन, धन से सेवा करके माता को प्रसन्न रखना, ताड़ना कभी न करना। 2. पिता- उसकी भी माता के समान सेवा करना। 3. आचार्य- जो विद्या और सुशिक्षा का देने वाला है उसकी तन, मन, धन से सेवा करना। 4. अतिथि- जो विद्वान, धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहने वाला संसार में घूमता हुआ, सत्य उपदेश से सबको सुखी करता है उसकी सेवा करना। 5. स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए अपनी पत्नी पूजनीय है।

ये पांच मूर्तिमान देव हैं जिनके संग से मनुष्य शरीर की उत्पत्ति, पालन, सत्यशिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। इनकी सेवा ही पंचदेव पूजा या पंचायतन पूजा है। परमेश्वर भी देव है, वह सबसे बड़ा महादेव है।

सत्यार्थप्रकाश की महिमा

महर्षि दयानन्द सरस्वती के कालजयी ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश का विश्व साहित्य में प्रेरक, स्मरणीय और महत्वपूर्ण स्थान है। इस ग्रन्थ ने संसार को ऐसी सच्चाई, दृष्टि, विचार-चिंतन आदि दिया है जिससे इसकी अद्भुत, विलक्षण तथा अलग अनूठी पहचान बन गई है। सभी बुद्धिजीवियों, समाज सुधारकों तथा धार्मिक लोगों को मिथ्या, अज्ञानतापूर्ण बातें, ढोंग-पाखंड, अंधश्रद्धा, आडंबर एवं प्रदर्शनपूर्ण कर्मकांड आदि के पुनर्विचार के लिए मजबूर होना पड़ा। सत्यार्थप्रकाश, सत्यज्ञान युक्त क्रांतिकारी प्रेरक विचारों का खजाना है। यह ग्रंथ वैदिक धर्म के सभी ग्रन्थों का सार प्रस्तुत करता है।

आर्य सिद्धान्तों और आदर्शों को जानने एवं समझने में यह रचना कुंजी का काम करती है। हजारों वर्षों के मत-मतांतरों द्वारा फैलाए गए ढोंग-पाखण्ड, गुरुडम, अंधविश्वास, जड़पूजा आदि अवैदिक बातों का तर्क, प्रमाण व बुद्धिपूर्वक निष्पक्ष विवेचन इसमें किया गया है। यह रचना अपार ज्ञान का भंडार और सूर्य के समान प्रकाश देने वाली है। सत्यार्थप्रकाश अपने में ऐसा अपूर्व व चमत्कारी ग्रन्थ है, इसको पढ़ने, सुनने और समझने के बाद व्यक्ति अंधविश्वास, अंधश्रद्धा, गुरु, महंत, महाराज, भगवानों आदि की पोपलीला तथा मायाचक्र में फंस नहीं सकता है। इस ग्रन्थ के प्रकाशित होने पर संसार को यथार्थ एवं सत्य का प्रकाश मिला। सत्यार्थप्रकाश का आधार- वेद, सत्य, सृष्टिक्रम, विज्ञान, तर्क, प्रमाण, आदि हैं। ऐसा कोई प्रश्न तथा सिद्धान्त नहीं है, जिस पर इसमें प्रकाश न डाला गया हो। ऐसा कोई अंधविश्वास एवं पाखंड नहीं है जिसका इसमें सच्चाई व तर्क से निराकरण न किया गया हो। अज्ञान, अंधविश्वास, गुरुडम आदि से उत्पन्न अनेक रोगों की एक औषधि- सत्यार्थप्रकाश है। यह वैचारिक क्रांति, सुधारवादी-चिंतन और जीवन-जगत का सच्चा पथ प्रदर्शक ऐतिहासिक ग्रन्थ है।

इस ग्रन्थ के सम्पर्क में आने के पश्चात व्यक्ति अंधकार से निकलकर प्रकाश की ओर आने लगता है। इसको पढ़ने के बाद मनुष्य के ज्ञानचक्षु खुल जाते हैं। उसे पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, जड़-चेतन, आदि का सत्य बोध हो जाता है। इस ग्रन्थ के निर्माण के पीछे महर्षि का स्पष्ट मत था-'सत्यासत्य अर्थ का प्रकाश करना। जो जैसा है, उसको वैसा ही कहना और बताना। जो सत्य के अर्थ को प्रकाशित करे- वही सत्यार्थप्रकाश है।' ऋषिवर ने भूमिका में स्पष्ट लिखा है।

'ऋतं वदिस्यामि, सत्यं वदिस्यामि, ऋत तथा सत्य का ही प्रतिपादन करूंगा। उनका यह बीज वाक्य उनके सम्पूर्ण जीवन और सभी ग्रन्थों में विद्यमान है। ऋषिवर का दूसरा नाम सत्य है। ऋषि सत्य के शोधक, सत्य के वक्ता, सत्य के प्रचारक व प्रसारक और अन्त में सत्य पर ही शहीद होने वाले निराले महामानव थे। ऋषि का किसी का मन दु:खाने का रंचमात्र भी उद्देश्य नहीं था। सज्जन को सज्जन और दुर्जन को दुर्जन कहना उनकी सत्यवादिता थी।

सत्यार्थप्रकाश दर्पण की तरह है- जिसका जैसा चेहरा, स्वरूप, कथनी व करनी है- वैसा ही इस ग्रंथ में दिखा दिया गया है। महर्षि दयानन्द जिन विचारों, सिद्धान्तों, मान्यताओं आदर्शों का प्रचार करते और लोगों को संदेश देना चाहते थे-उसे उन्होंने अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' में संकलित कर दिया है। सत्यार्थप्रकाश साधारण ग्रंथ नहीं है, जैसे ऋषि विलक्षण, निराले, अद्वितीय और क्रांतिकारी थे, वैसे ही उनका सत्यार्थप्रकाश भी इन विशेषताओं से भरा हुआ है। विश्व साहित्य में आज तक इस ग्रन्थ की तुलना की कोई दूसरी रचना नहीं लिखी गई है। यह कृति अपने में अपूर्व अनूठी, सबसे हटकर और ऐतिहासिक है।

सत्यार्थप्रकाश हमारी सभ्यता एवं संस्कृति की कुंजी है। यह ग्रन्थ हमारी नसों में स्वत्वबोध, स्वधर्म, स्वसंकृति, स्वाभिमान, स्वभाषा, स्वदेश आदि का गर्म खून प्रवाहित करता है। यह रचना मानव के निर्माण, विकास, उत्थान, इहलोक, परलोक, आदि सभी विषयों का चिंतन और मौलिक दृष्टि देती है। इसमें वैदिक धर्म और अन्य मत-मतांतरों के अंतर को बड़े तटस्थभाव और तर्क-प्रमाण से सफलतापूर्वक समझाया है। सत्यार्थप्रकाश आर्यसमाज का दादा ग्रंथ कहलाता है। यह आर्यसमाज के सिद्धांतों, विचारों, आदर्शों और वैदिक परंपरा का आधार ग्रंथ है। महर्षि ने लगभग तीन सौ ग्रन्थों का अध्ययन एवं चिंतन-मनन करके सत्यार्थप्रकाश लिखा है। इसको बिना पढ़े वैदिक धर्म, भारतीय संस्कृति, सभ्यता, आर्यसमाज के मन्तव्य, आत्मा-परमात्मा का सत्य स्वरूप और अपनी विरासत व वसीयत को सच्चे अर्थों में नहीं जाना जा सकता है।

■■ डा. महेश विद्यालंकार

सुहागिनों का त्योहार करवा-चौथ का व्रत

■ गंगाशरण आर्य (साहित्य सुमन)

पति की लम्बी आयु की कामना या पत्नी की इच्छापूर्ति का साधन- व्रत का अर्थ है-बर्तन, बर्ताव या कर्तव्यपालन अर्थात किसी कार्य, नियम, अनुष्ठान आदि को करने का दृढ़ निश्चय कर लेना कहलाता है न कि भूखे रहकर उपवास करना। आज व्रत का वास्तविक अर्थ तो पीछे छूट गया है लेकिन जिस अर्थ को लेकर महिलाएं व्रत रखती है उस पर भी खरी नहीं उतरती। अब इनके व्रत-व्रत नहीं एक तरफ तो व्रत हैं और दूसरी तरफ अपनी इच्छापूर्ति का साधन। साथ ही बढ़ते हुए अंधविश्वास की पराकाष्ठा इतनी हो गई है कि शिक्षित होने के बाद भी महिलाएं इन व्रतों से जुड़ी कपोल-कल्पित दंत कथाओं पर विचार किए बिना ही अंधाविश्वास कर लेती है तथा कई बार न चाहते हुए भी डर से यह व्रत करती है। पहली प्रचलित व्रत कथा इस प्रकार है- तुंगभद्रा नदी के किनारे करवा नाम की एक धोबिन रहती थी। उसका पति नदी में कपड़े धो रहा था कि अचानक उसे मगरमच्छ ने पकड़ लिया। उसने करवा को पुकारा। वह यमलोक के दरबार में जाकर पति के जीवनदान के लिए आग्रह करने लगी। यमराज ने प्रसन्न होकर कहा- 'जाओ तुम्हारा पति तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। आज से जो भी महिला तुम्हारी तरह कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी का व्रत रखेगी, उसके पति की रक्षा मैं करूंगा' करवा घर पहुंची। सचमुच ही उसका पति प्रतीक्षा कर रहा था।

जरा विचार करें कि क्या जो व्यक्ति एकबार यमलोक चला गया वह पुन: लौटकर वापस आ सकता है? यदि नहीं तो फिर उस धोबिन का पति कैसे जीवित हो गया? यह बिल्कुल असंभव है और सृष्टि नियम के विरुद्ध है। सामान्य सी बात है जरा विचार करें कि वास्तव में किसी का मृतक परिजन यदि लौटकर उनके घर के दरवाने पर आ खड़ा हो तो क्या वे उसे स्वीकार कर लेंगे? बहुरूपिया कहकर नहीं भगाएंगे? अच्छा चलो मान भी ले कि उसका पति जीवित हो गया तो फिर क्या उसका पति इस घटना के बाद कभी सामान्य उम्र बीतने पर भी नहीं मरा? यदि मरा तो फिर उसके करवा चौथ के व्रत का क्या फायदा हुआ? इसी करवा चौथ की दूसरी प्रचलित कथा इस प्रकार है-

अर्जुन जब तप करने के लिए जाने लगे तब पति-परायणा द्रोपदी चिंतित हो उठी। उसने श्रीकृष्ण से अपने पति के तप की निर्विघ्न समाप्ति का उपाय पूछा श्रीकृष्ण ने वही 'कर्क-चतुर्थी का व्रत बतलाया जो शिव ने पार्वती को पति के कल्याण के लिए बताया था। शिव ने पार्वती से कहा कि- किसी गृहस्थ के सात पुत्र और एक वीरवती नाम की पुत्री थी। उसने अपने सौभाग्य की रक्षा के लिए करवा चौथ का व्रत किया। रात्रि भोजन के समय भाईयों ने बहन को भोजन के लिए बुलाया। बहन ने कहा कि उसका व्रत है, वह चन्द्रमा के दर्शन करके ही भोजन करेगी। उपवास से व्याकुल बहन को देखकर भाइयों ने कृत्रिम प्रकाश कर कहा कि चन्द्रमा के दर्शन कर लो। इस कृत्रिम प्रकाश को ही चन्द्रमा समझकर बहन ने अर्घ्य आदि देकर भोजन कर लिया। इस व्रत-दूषण से उसके पति की सहसा मृत्यु हो गई।

एक वर्ष तक वीरवती शिव की पूजा-अर्चना करते हुए निराहार व्रत करती रही। करवा चौथ आने पर उसने विधिपूर्वक व्रत पूर्ण करके भोजन किया। परिणाम स्वरूप उसका पति जीवित हो गया। जो स्त्रियां विधि पूर्वक करवा चौथ का व्रत करती हैं वे सदा सौभाग्यवती रहती है। श्रीकृष्ण से इस कथा का श्रवण कर द्रोपदी ने भी यह व्रत किया।

सर्वप्रथम तो यहां विचार करने की बात यह है कि द्रोपदी विदुषी थी और अर्जुन वीर धनुर्धारी थे। पहली बात तो इतनी विद्वान द्रोपदी जो क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाली थी एवं शस्त्र विद्या में भी पारगत थी, क्या वह इन गपोड़ों को मान्यता दे सकती है? कभी नहीं। दूसरी बात वीरवर अर्जुन पहली बार तो तप करने के लिए घर से निकले नहीं होंगे उनका तो बचपन ही अपने पिता व माताओं के साथ में वन में बीता और वे बड़े होकर श्रेष्ठ धर्नुविद्या के ज्ञाता बनें तो क्या वे अपनी रक्षा स्वयं नहीं कर सकते थे। क्या व्रत करके द्रोपदी उनकी विद्या का मजाक उड़ा रही थी कि उसके द्वारा किया गए करवाचौथ के व्रत से ही अर्जुन की रक्षा होगी। तभी अर्जुन का तप निर्विघ्न समाप्त होगा अन्यथा कुछ भी हो सकता है। रही बात कथा की तो चंद्रमा के दर्शन से पूर्व भोजन करने से तो पति का मृत्यु हो गई और एक वर्ष बाद चंद्रमा के दर्शन करके भोजन करने पर मरा हुआ पति भी जीवित हो उठा। यह सृष्टि प्रक्रिया के सर्वथा विपरीत हैं। ➲

ईश्वर के संबंध में महर्षि के विचार

ईश्वर दयालु एवं न्यायकारी है। न्याय और दया में नाम मात्र ही भेद है, क्योंकि जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है वही दया से। दण्ड देने का प्रयोजन है कि मनुष्य अपराध करने से बंध होकर दुखों को प्राप्त न हो, वही दया कहलाती है। जिसने जैसा जितना बुरा कर्म किया है उसको उतना है दण्ड देना चाहिये, उसी का नाम न्याय है। जो अपराध का दण्ड न दिया जाय तो न्याय का नाश हो जाय। क्योंकि एक अपराधी को छोड़ देने से सहस्त्रों धर्मात्मा पुरुषों को दुख देना है। जब एक को छोड़ने से सहस्त्रों मनुष्यों को दुख प्राप्त होता हो तो वह दया किस प्रकार हो सकती है? दया वही है कि अपराधी को कारागार में रखकर पाप करने से बचाना।

चारों वेदों में ऐसा कहीं नहीं लिखा जिससे अनेक ईश्वर सिद्ध हों। किन्तु यह तो लिखा है कि ईश्वर एक है। देवता दिव्य गुणों के युक्त होने के कारण कहलाते हैं जैसा कि पृथ्वी, परन्तु इसको कहीं ईश्वर तथा उपासनीय नहीं माना है। जिसमें सब देवता स्थित हैं, वह जानने एवं उपासना करने योग्य देवों का देव होने से महादेव इसलिये कहलाता है कि वही सब जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयकर्ता, न्यायाधीश, अधिष्ठाता है।

ईश्वर दयालु एवं न्यायकारी है। न्याय और दया में नाम मात्र ही भेद है, क्योंकि जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है वही दया से। दण्ड देने का प्रयोजन है कि मनुष्य अपराध करने से बंध होकर दुखों को प्राप्त न हो, वही दया कहलाती है। जिसने जैसा जितना बुरा कर्म किया है उसको उतना है दण्ड देना चाहिये, उसी का नाम न्याय है। जो अपराध का दण्ड न दिया जाय तो न्याय का नाश हो जाय। क्योंकि एक अपराधी को छोड़ देने से सहस्त्रों धर्मात्मा पुरुषों को दुख देना है। जब एक को छोड़ने से सहस्त्रों मनुष्यों को दुख प्राप्त होता हो तो वह दया किस प्रकार हो सकती है? दया वही है कि अपराधी को कारागार में रखकर पाप करने से बचाना। निरंतर एवं जघन्य अपराध करने पर मृत्युदण्ड देकर अन्य सहस्त्रों मनुष्यों पर दया प्रकाशित करना।

संसार में तो सच्चा झूठा दोनों सुनने में आते हैं। किन्तु उसका विचार से निश्चय करना अपना अपना काम है। ईश्वर की पूर्ण दया तो यह है कि जिसने जीवों के प्रयोजन सिद्ध होने के अर्थ जगत में सकल पदार्थ उत्पन्न करके दान दे रखे हैं। इससे भिन्न दूसरी बड़ी दया कौन सी है? अब न्याय का फल प्रत्यक्ष दीखता है कि सुख-दुख की व्याख्या अधिक और न्यूनता से प्रकाशित कर रही है। इन दोनों का इतना ही भेद है कि जो मन में सबको सुख होने और दुख छूटने की इच्छा और क्रिया करना है वह दया और बाह्य चेष्टा अर्थात बंधन छेदनादि यथावत दण्ड देना न्याय कहलाता है। दोनों का एक प्रयोजन यह है कि सब को पाप और दुख से पृथक कर देना।

ईश्वर यदि साकार होता तो व्यापक नहीं हो सकता। जब व्यापक न होता तो सर्वाज्ञादि गुण भी ईश्वर में नहीं घट सकते। क्योंकि परिमित वस्तु में गुण, कर्म, स्वभाव भी परिमित रहते हैं तथा शीतोष्ण, क्षुधा, तृष्णा और रोग, दोष, छेदन, भेदन आदि से रहित नहीं हो सकता। अतः निश्चित है कि ईश्वर निराकार है। जो साकार हो तो उसके नाक, कान, आंख आदि अवयवों को बनाने वाला ईश्वर के अतिरिक्त कोई दूसरा होना चाहिये। क्योंकि जो संयोग से उत्पन्न होता हो उसको संयुक्त करने वाला निराकार चेतन आवश्य होना चाहिये। कोई कहता है कि ईश्वर ने स्वेच्छा से आप ही आप अपना शरीर बना लिया। तो भी यही सिद्ध हुआ कि शरीर बनाने के पूर्व वह निराकार था। इसलिये परमात्मा कभी शरीर धारण नहीं करता। किन्तु निराकार होने से सब जगत को सूक्ष्म कारणों से स्थूलाकार बना देता है।

सर्वशक्तिमान का अर्थ है कि ईश्वर अपने काम अर्थात उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पाप पुण्य की यथा योग्य व्यवस्था करने में किंचित भी किसी की सहायता नहीं लेता अर्थात अपने अनंत सामर्थ्य से ही सब अपना काम पूर्ण कर लेता है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है की परमेश्वर वह सब कर सकता है जो उसे नहीं करना चाहिये। जैसे- अपने आपको मारना, अनेक ईश्वर बनाना, स्वयं अविद्वान, चोरी, व्यभिचारादि पाप कर्म कर और दुखी भी हो सकना। ये काम ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव से विरुद्ध हैं। ईश्वर आदि भी है और अनादि भी। ईश्वर सबकी भलाई एवं सबके लिये सुख चाहता है परन्तु स्वतंत्रता के साथ किसी को बिना पाप किये पराधीन नहीं करता। ■■

The Myth of Aryan Invasion of India

Article by- Dr. Vivek Arya

Aryavarta or Aryavarta is the ancient name of our country. Aryavarta is the oldest one but not much in common use these days. In ancient texts, there is sufficient usage of the word "Aryavarta". Aryavarta refers to the Land of Aryas means the land of Noble People.

Swami Dayanand in his magnum opus Satyarth Prakash writes the definition of Aryavrata as "the tract between the Himalaya and the Vindhya ranges, from the eastern side Bay of Bengal to the Western side the Arabian Sea. Manusmriti 2/22

Here the Vindhya range is considered up to the southern tip of the Indian peninsula not up to the Deccan plateau. Aryavarta means the land of Aryans or Arya.The word Arya do not indicates for any specific race or tribe named as Aryans. The word Arya defines a person who has integrity, courage, honesty, gentleness, compassion, eagerness for knowledge and respect for the wise and learned. The Arya is one who is humane, dedicated to doing good to the world through the use of truth, love, protection of the weak and absolute fairness between men and men and nations and nations. He strives to overcome all outside him and within him that stands opposed to advancing justice, freedom and meritocracy in society.

Self-conquest is the first law of his nature. He overcomes the mind and its habits and does not live in a shell of ignorance based on inherited prejudices, fashionable customs and hedonism. Instead he knows how to be pure, to be large and flexible in intelligence as well as being firm and strong in his will. The Aryas a worker and a warrior. Sri Aurobindo also supports the same stand on definition of Arya.One confusion comes regarding Aryan Invasion theory Aryan invasion theory is a fake theory coined by western indologists to divide our country. Still today many politicians are promoting this theory for their vested interests. Until today no evidence of any invasion have been found to prove Aryan Invasion Theory. Swami Dayanand was first to reject Aryan Invasion Theory. Even Dr B.R.Ambedkar rejected Aryan Invasion theory (AIT).

He concluded: "the Brahmins and the untouchables belong to the same race."In his book Who were the Shudras? in 1946 B. R. Ambedkar famous for his work on the Indian Constitution, as well as his campaign in support of the Harijans, studied the Vedas. He devoted a complete chapter - Shudras versus Aryans -to an examination of the issue.Citing extensively the Vedic sources which suggest that the distinction between an Arya and Dasa/Dasyu was not a racial distinction of color and physiognomy and thus the origin of Sudra could not have anything to do with race, Ambedkar conclusion are unequivocal, though regrettably they are largely ignored.

"The theory of invasion is an invention. This invention is necessary because of a gratuitous assumption that the Indo-Germanic people are the purest of the modern representation of the original Aryan race. The theory is perversion of scientific investigation. It is not allowed to evolve out of facts. On the contrary, the theory is preconceived and facts are selected to prove it. It falls to the ground at every point.

वीर को सन्देश

आ मेरे देश के वीर जवान गर्व से फूल जा
याद रख शहीदों को और सब कुछ भूल जा।।

तुम आगे इसलिए थे क्योंकि हमारी ढाल हैं
जब टकरायेंगे दुश्मन से तो पूछने आपके हाल है
दिल के दरवाजे में बन्द हैं जो करने सवाल है
तुम्हारे पीछे खड़े थे मगर हम भी तो घायल हैं
दुश्मनों का पकड़ कर हाथ चाहे घाटी में झूल जा
याद रख शहीदों को और सब कुछ भूल जा।।

जब शहीद हुए आपका खून तो बहा है
हमको भी देख न इतना खून हममें भी रहा है
आप के दुखों को हमने अपने सीने पर सहा है
देश पर शहीद हों ये हमारे पूर्वजों ने कहा है
आज हमारे लिए ये उनके छोड़ वसूल जा
याद रख शहीदों को और सब कुछ भूल जा।।

यातनाएं आपकी हम सहज से नहीं झेलेंगे
दुःख जो आपने सहे वो हम भी खें लेगें
भार जो आपके कंधों पर था वो हम भी लें लेंगे
देखना दुश्मन से खून की होली हम भी खेलेंगे
सुनकर बिगुल हमारा तूं स्वर्ग में भी टूल जा
याद रख शहीदों को और सब कुछ भूल जा।।

➲ **महेंद्र सिंह बिलोटिया, चरखी दादरी हरियाणा**

आशाएं...

आशाएं ऐसी हो जो- मंजिल तक ले जाएं
मंजिल ऐसी हो जो- जीवन जीना सिखा दे
जीवन ऐसा हो जो- संबंधों की कदर करे

और संबंध ऐसे हो जो- याद करने को मजबूर कर दे
दुनिया के रैन बसेरे में- पता नहीं कितने दिन रहना है
जीत लो सबके दिलों को- बस यही जीवन का गहना है।।

➲ **शिवानी मिश्रा**

भजन

करें स्तुति कैसे प्रभु आपकी
प्रार्थना उपासना विधि प्रभु आपकी।।

सुकर्मा हो आपने ही जगत रचाया है।
अनंत ब्रह्माण्ड कहीं छोर ना पाया है।।

ज्ञान बल क्रिया स्वभाविक है।
निष्काम और लोकोपकारिक है।।

चंद्र पृथ्वी आदि में जो निरंतर गति है।
तेरा ही आकर्षण और शक्ति है।।

सूर्य तारे सारे तेरे ही सहारे।
टिके हे जग के पालन हारे।।

सर्व गुण निधान यदि तेरी कृपा हो।
छोड़ दुर्गुण प्राप्त करें मेधा को।।

बीज रूप से वेद में सब विद्या।
उसी ज्ञान से मन बने शुचिता।।

शुद्ध चित्त में ही प्रभु आपका वास है।
अनंत ऐश्वर्य ज्योति प्रकाश है।।

करें जो निरंतर श्रद्धा भक्ति।
अनिल दत्त पायें दुखों से मुक्ति।।

➲ **अनिल दत्त**

महर्षि दयानन्दकृत ओंकार

ईश्वर का निज नाम 'ओ३म्' है। इस नाम में ईश्वर के सम्पूर्ण स्वरूप का वर्णन है। यदि परमात्मा कहें तो इसके कहने से सब जीवों का अंतर्यामी आत्मा इसी अर्थ का बोध होता है, न कि सर्वशक्ति, सर्वज्ञान आदि गुणों का। सर्वज्ञ कहने से सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान कहने से ईश्वर सर्वशक्तियुक्त है, इन्हीं गुणों का बोध होता है, शेष गुण-कर्म-स्वभाव का नहीं। ओ३म् नाम में ईश्वर के सर्व गुण-कर्म-स्वभाव प्रकट हो जाते हैं। जैसे एक छोटे-से बीज में सम्पूर्ण वृक्ष समाया होता है, वैसे ही 'ओ३म्' में ईश्वर के सर्वगुण प्रकट हो जाते हैं। महर्षि दयानन्दजी महाराज अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रथम समुल्लास में ओ३म् को 'अ, उ, म्' इन तीन अक्षरों का समुदाय मानते हैं। स्वामी जी को अ से अकार, उ से उकार तथा म् से मकार अर्थ अभीष्ट है। परमात्मा के अलग-अलग नामों का ग्रहण किया है- अकार से विराट, अग्नि और विश्वादि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि।

संस्कृत भाषा में पदान्तरों के अक्षर लेकर स्वतंत्र शब्दों का प्रयोग होता है। इस पर शौनक ऋषि का मंतव्य है- शब्दों में धातु, उपसर्ग तथा अन्य शब्दों के अवयवों की भी ध्वनियां होती हैं। वे शब्द एक धातु के भी बने होते हैं और कुछ शब्द दो धातुओं से बनते हैं तथा कुछ शब्द बहुत धातुओं से बनते हैं। वे शब्द पांच प्रकार के होते हैं। 1. धातु से बने शब्द- अग्नि आदि। 2. धातुओं से बने शब्दों से बनाये हुए शब्द-रत्नधा+तमम्। 3. उपपद रखकर बने शब्द- यन् जः= यज्ञः। 4. वाक्य से बने शब्द- इति + ह + आस= इतिहास। 5. बिखरे हुए अवयवों से बने शब्द- अ उ म्= ओ३म्।

महाभाष्यकार ने भी स्पष्ट घोषणा की है- बह्वर्था अपि धातवो भवन्ति (1/3/1)। जब एक-एक धातु के अनेक अर्थ होंगे तो उनसे निष्पन्न शब्द भी अनेकार्थवाची होंगे। अन्य भाषाओं में भी दूसरे शब्दों के अवयव लेकर एक स्वतंत्र शब्द का निर्माण हुआ है। उदाहरण के लिए, जैसे अंग्रेजी भाषा में एक शब्द 'News' है, जिसका अर्थ है- समाचार- चारों तरफ से जो बातें आती हैं उसको समाचार कहते हैं। लेकिन इनका आदि अक्षर अंग्रेजी भाषा में चारों दिशाओं के नामों को भी प्रकट करता है- North- उत्तर दिशा, East- पूर्व दिशा, West- पश्चिम दिशा, South- दक्षिण दिशा। इसी तरह 'अ, उ, म्' इन तीनों अक्षरों का समुदित रूप यह 'ओ३म्' है। यथा-सोऽयमात्माऽध्यक्षरमोंकारोऽधिमात्रं पादा मात्रा मात्राश्च पादा, अकार, उकार मकार इति।। -माण्डूकयो

अर्थात्- यह आत्मा (परमात्मा) अक्षर में अधिष्ठित है। वह अक्षर ओंकार=ओ३म् है। वह ओंकार मात्राओं में अधिष्ठित है और वे मात्राएं अकार, उकार, मकार हैं। माण्डूकयोपनिद् का ऐसा सिद्धांत प्रतीत होता है कि यह दो धातु और एक उपसर्ग से 'ओ३म् शब्द की सिद्धि मानती हो। श्रुति 9,10,11 में 'अप' धातु से 'अ, उत् उपसर्ग से उ और मा व मि धातु से म्' लेकर 'ओ३म्' शब्द की सिद्धि करती है। यथा- 'अकारः प्रथमा मात्रा-आप्तेः, आदिमत्वाद् वा। उकारो द्वितीया मात्रा उत्कर्षात्, उभयत्वाद् वा। मकारस्तृतीया मात्रा-मितेः, अपीतेर्वा।'

अर्थ- अकार प्रथम मात्रा है, अकार का अर्थ है- व्याप्ति और आदि। उकार दूसरी मात्रा है, उकार का अर्थ है- उत्कर्ष और उभयादि। मकार तीसरी मात्रा है, मकार का अर्थ है- मिति और अपीति आदि। महर्षि दयानन्द द्वारा किए प्रत्येक शब्द का अर्थ उनके स्वाध्याय-चिन्तन को हमारे समक्ष प्रबलता से स्थापित करता है। आर्ष शास्त्रों के अनुसार अकार, उकार तथा मकार का महर्षिकृत अर्थ परस्पर संबंध रखने वाला है।

■■ **प्रियांशु सेठ, वाराणसी**

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)" द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 27 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 108 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। केवल भोजन शुल्क ही लिया जाता है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734

उपप्रधान, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, (उप्र)

अच्छाई पलट-पलट कर आती है...

अच्छाई पलट-पलट कर आती रहती है! यकीन मानिए मानवता की दिशा में उठाया गया प्रत्येक कदम आपकी स्वयं की चिंताओं को कम करने में मील का पत्थर साबित होगा । कुंए में उतरने के बाद बाल्टी झुकती है, लेकिन झुकने के बाद, भर कर ही बाहर निकलती है। यहीं जिंदगी जीने का सार हैं। जीवन भी कुछ ऐसा ही है, जो झुकता है वो अवश्य, कुछ न कुछ लेकर ही उठता है

ब्रिटेन के स्कॉटलैंड में फ्लेमिंग नाम का एक गरीब किसान था। एक दिन वह अपने खेत पर काम कर रहा था। अचानक पास में से किसी के चीखने की आवाज सुनाई पड़ी। किसान ने अपना साजो सामान व औजार फेंका और तेजी से आवाज की तरफ लपका।

आवाज की दिशा में जाने पर उसने देखा कि एक बच्चा दलदल में डूब रहा था। वह बालक कमर तक कीचड़ में फंसा हुआ बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहा था। वह डर के मारे बुरी तरह कांप पर रहा था और चिल्ला रहा था। किसान ने आनन-फानन में लंबी टहनी ढूंढी। अपनी जान पर खेलकर उस टहनी के सहारे बच्चे को बाहर निकाला। अगले दिन उस किसान की छोटी सी झोपड़ी के सामने एक शानदार गाड़ी आकर खड़ी हुई। उसमें से कीमती वस्त्र पहने हुए एक सज्जन उतरे उन्होंने किसान को अपना परिचय देते हुए कहा- 'मैं उस बालक का पिता हूं और मेरा नाम रॉडॉल्फ चर्चिल है।' फिर उस अमीर रॉडाल्फ चर्चिल ने कहा कि वह इस एहसान का बदला चुकाने आए हैं।

फ्लेमिंग नामक उस किसान ने उन सज्जन के ऑफर को ठुकरा दिया। उसने कहा, 'मैंने जो कुछ किया उसके बदले में कोई पैसा नहीं लूंगा। किसी को बचाना मेरा कर्तव्य है, मानवता है, इंसानियत है और उस मानवता इंसानियत का कोई मोल नहीं होता।'

इसी बीच फ्लेमिंग का बेटा झोपड़ी के दरवाजे पर आया। उस अमीर सज्जन की नजर अचानक उस पर गई तो उसे एक विचार सूझा। उसने पूछा- 'क्या यह आपका बेटा है?' किसान ने गर्व से कहा- हां!'

उस व्यक्ति ने अब नए सिरे से बात शुरू करते हुए किसान से कहा- ठीक है अगर आपको मेरी कीमत मंजूर नहीं है तो ऐसा करते हैं कि आपके बेटे की शिक्षा का भार मैं अपने ऊपर लेता हूं। मैं उसे उसी स्तर की शिक्षा दिलवाने की व्यवस्था करूंगा जो अपने बेटे को दिलवा रहा हूं। फिर आपका बेटा आगे चलकर एक ऐसा इंसान बनेगा, जिस पर हम दोनों गर्व महसूस करेंगे।

किसान ने सोचा 'मैं तो अपने पुत्र को उच्च शिक्षा दिला पाऊंगा नहीं और ना ही सारी सुविधाएं जुटा पाऊंगा, जिससे कि यह बड़ा आदमी बन सके। अत: इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता हूं। बच्चे के भविष्य की खातिर फ्लेमिंग तैयार हो गया। अब फ्लेमिंग के बेटे को सर्वश्रेष्ठ स्कूल में पढ़ने का मौका मिला। आगे बढ़ते हुए उसने लंदन के प्रतिष्ठित सेंट मेरीज मेडिकल स्कूल से स्नातक डिग्री हासिल की। फिर किसान का यही बेटा पूरी दुनिया में 'पेनिसिलिन' का आविष्कारक महान वैज्ञानिक सर अलेक्जेंडर फ्लेमिंग के नाम से विख्यात हुआ।

यह कहानी यहीं खत्म नहीं होती! कुछ वर्षों बाद, उस अमीर के बेटे को निमोनिया हो गया। और उसकी जान पेनिसिलीन के इंजेक्शन से ही बची। उस अमीर रॉडाल्फ चर्चिल के बेटे का नाम था- विंस्टन चर्चिल, जो दो बार ब्रिटेन के प्रधानमंत्री रहे! हैं न आश्चर्यजनक संजोग। इसलिए ही कहते हैं कि व्यक्ति को हमेशा अच्छे काम करते रहना चाहिए। क्योंकि आपका किया हुआ काम आखिरकार लौटकर आपके ही पास आता है! यानी अच्छाई पलट-पलट कर आती रहती है! यकीन मानिए मानवता की दिशा में उठाया गया प्रत्येक कदम आपकी स्वयं की चिंताओं को कम करने में मील का पत्थर साबित होगा ।

कुंए में उतरने के बाद बाल्टी झुकती है, लेकिन झुकने के बाद, भर कर ही बाहर निकलती है। यहीं जिंदगी जीने का सार हैं। जीवन भी कुछ ऐसा ही है, जो झुकता है वो अवश्य, कुछ न कुछ लेकर ही उठता है।

समाचार - सूचनाएं

- 2 अक्टूबर : महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री का जन्म दिवस मनाया गया।
- 24 अक्टूबर : महात्मा आनंद स्वामी स्मृति दिवस मनाया गया।
- 25 अक्टूबर : विजयदशमी और दंडी स्वामी विरजानंद स्मृति दिवस मनाया गया।
- 28 अक्टूबर : स्वामी समर्पणानंद स्मृति दिवस मनाया गया।
- 30 अक्टूबर : महर्षि दयानन्द का 137वां निर्वाण दिवस मनाया गया।
- 31 अक्टूबर : लौहपुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल का जन्म दिवस मनाया गया।

आगामी कार्यक्रम :

- 14 नवम्बर : बाल दिवस और पं. जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री का जन्म।
- 14 नवम्बर : महात्मा हंसराज स्मृति दिवस।
- 17 नवम्बर : लाला लाजपत राय बलिदान दिवस।
- 24 नवम्बर : वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु स्मृति दिवस।
- आर्य समाज, आर्षगुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा का भव्य वार्षिकोत्सव 11-12-13 दिसम्बर 2020 को होना निश्चित किया गया है। आर्य वेदकथा, भजन, आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

विनम्र श्रद्धांजलि

आर्यजगत को भारी क्षति! आर्यसमाज के सजग प्रहरी, ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, अपने गीतों के समग्र विश्व को मंत्रमुग्ध करने वाले आर्य जगत के महान गीतकार पं. सत्यपाल जी पथिक हमारे बीच नहीं रहे। पथिक जी निःस्वार्थ भावना से कार्य करते हुए अपना सारा जीवन सामाजिक कार्य में समर्पित किया। ऐसे आर्यसमाजी के निधन पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

श्री विजयगुप्त, आशु कवि मदनगीर आर्य समाज के संरक्षक, सरल हृदय, अनेक पुस्तकों के लेखक, जम्मू-कश्मीर से विस्थापित होकर दिल्ली की मदनगीर बस्ती में आए और शिशु पाठशाला खोलकर गरीब बच्चों को शिक्षा प्रदान की। श्री गुप्त का पिछले दिनों निधन हो गया था। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

आर्यजगत को भारी क्षति! श्री सत्यव्रत सामवेदी जी कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, सम्पादक 'आर्यनीति' ओजस्वी, कुशल निर्भीक वक्ता, उन्होंने राजस्थान के गांवों में वैदिक प्रचार-प्रसार में बड़ी भूमिका निभाई, बुलंद आवाज के मालिक का निधन पिछले दिनों हो गया। उनकी क्षति आर्यजगत की विशेष क्षति है। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

- प्रबंध सम्पादक, 'विश्ववारा संस्कृति'

जाति नहीं, वर्ण व्यवस्था

आर्यसमाज वर्ण व्यवस्था का समर्थक है। वर्ण व्यवस्था का आधार गुण-कर्म-स्वभाव है, जबकि जाति प्रथा जन्मजात है। वर्ण व्यवस्था में जो पढ़ाने से भी न पढ़े और अनपढ़ रहकर सेवा करे वह शूद्र कहलाता है और शिक्षित व संस्कारित होकर श्रेष्ठ कर्म करनेवाला द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय आदि कहलाता है। कर्म ही व्यक्ति को श्रेष्ठ और पतित बनाते हैं। वैदिक वर्ण व्यवस्था और मनु के अनुसार किसी भी कुल में जन्मा बालक शिक्षा व योग्यता के आधार पर ब्राह्मण आदि बन सकता है। विद्या और सदाचार से हीन ब्राह्मण का पुत्र भी शूद्र माना जाता है। **जय हिंद ! जय भारत माता !!**

विशेष निवेदन : आर्य समाज नोएडा के अन्तर्गत आर्ष गुरुकुल शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र पिछले कई वर्षों से क्रियाशील है और ब्रह्मचारियों को कोरोना महामारी के कारण संस्था में सहयोग प्राप्त नहीं हो पा रहा है। सरकार की ओर से किसी प्रकार का अनुदान संस्था को नहीं प्राप्त होता। आप जैसे क्रियाशील महानुभावों जो भारतीय वैदिक संस्कृति के पोषक हैं, उन्हीं द्वारा सहयोग मिलता है।

अतः आपसे अनुरोध है कि अपना आशीर्वाद बनाए रखें व यथासंभव सहयोग प्रदान करें। संस्था को 17 X 80 G की सुविधा प्राप्त है, जिसे आप ले सकते हैं।

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734

आर्य ही आदिसंस्थापक, आदर्श मूल निवासी है भारतवर्ष के

अंग्रेजों ने भारत आगमन से ही सांस्कृतिक जहर घोलना शुरू कर दिया राम-कृष्ण के वंशज भारतवासियों को आर्य द्रविड़ में बांट दिया कहा कि द्रविड़ आर्यों के भारत में आक्रमण से पूर्व उत्तर भारत में ही निवास करते थे आर्यों ने उन पर हमला कर उन्हें विंध्य के पार समुद्रतटीय दक्षिण भारत की ओर धकेल दिया खुद उत्तर मध्य भारत पर शासन करने लगे।

अंग्रेज इतिहासकारों के बाद भारत में आर्यों को आक्रांता विदेशी सिद्ध करने का बीड़ा वामपंथी भारतीय इतिहासकारों ने उठा लिया। एसएसटी, इतिहास से संबंधित एनसीईआरटी की किताबों में तो यदाकदा आज भी आर्यों को विदेशी आक्रांता ही बताया जा रहा है इनकी चतुराई तो देखिए आर्यों को एक स्वर में विदेशी मानते हुए उनके उत्पत्ति स्थान पर सब भिन्न-भिन्न राय यह वामपंथी इतिहासकार देते है कोई कहता है आर्य इरान से आए तो कोई मध्य एशिया तो कोई पश्चिम एशिया तो कोई यूरोप से आर्यों के आगमन के सिद्धांत को बताता।

अंग्रेजों ने यह झूठा जहरीला सिद्धांत हम पर शासन करने के लिए दिया कोई भी शासक अपने दास को अपने से श्रेष्ठ कैसे मान सकता है? हमारी सांस्कृतिक एकता को तोड़ने के लिए अर्थात् हम भी विदेशी तो तुम भी विदेशी सिद्धांत के तहत यह सिद्धांत झूठ प्रचारित किया गया।

वामपंथी अपनी आदत से लाचार होकर बेशर्मी से इस झूठे जहरीले सिद्धांत पर आज भी अड़े हुए हैं... मंदबुद्धि बौद्ध तथाकथित दलितों के मसीहा के कहलाने वाले संगठन स्वार्थ की गंगा में हाथ बहा रहे हैं-अपनी खुन्नस को निकालने के लिए वह मूलनिवासी-मूलनिवासी गाते रहते हैं।

मैक्स मूलर जैसे कुटिल स्वघोषित संस्कृत के पंडित उसी की जमात के अंग्रेज जर्मन इतिहासकार के गाल पर सबसे पहला करारा तमाचा 19वीं शताब्दी के धार्मिक वैचारिक क्रांतिकारी संगठन आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लगाया उन्होंने कहा आर्य विदेशी नहीं है कोई नस्ल नहीं है और वह प्रत्येक मनुष्य आर्य है जो श्रेष्ठ है आर्य गुणवाचक शब्द है भारतवर्ष का प्राचीन नाम आर्यव्रत था हमारे पूर्वज ने पूरी दुनिया में सर्वोत्तम जान इसे बसाया। हमारे पूर्वज आर्य सृष्टि की आदि से ही से ही इस भूभाग पर शासन करते आए हैं। जब आर्यवृत्त की स्थापना हुई तब संसार के अन्य किसी भूभाग पर मनुष्य का निवास नहीं था। ऐसे में यह प्रश्न ही नहीं उठता कि दुनिया के अन्य किसी भूभाग से मनुष्य चलकर भारत भूमि पर आए। अपितु हमारे पूर्वज आर्यों ने ही अन्य भूखंडों दीप को ज्ञान कला कौशल संस्कृति से आबाद किया।

पश्चिमी वामपंथी इतिहासकार कहते हैं सिंधु घाटी सभ्यता जिसे हड़प्पा सभ्यता भी कहते हैं आर्य वैदिक सभ्यता से प्राचीन है। आर्यों ने सिंधुघाटी सभ्यता को नष्ट कर दिया। पहले सिंधु घाटी सभ्यता को 4000 वर्ष प्राचीन बताते थे अब यह सिद्ध हो गया है सिंधुघाटी सभ्यता कम से कम 9000 वर्ष प्राचीन है। महाभारत को घटित हुए लगभग 5000 वर्ष हो चुके हैं। महाभारत ग्रंथ में कहीं भी किसी अन्य सभ्यता का जिक्र नहीं है सनातन वैदिक आचार आर्य संस्कृति का ही बखान है ऐसे में यदि कोई अन्य समानांतर सिंधु घाटी, हड़प्पा सभ्यता होती तो उसका उल्लेख जरूर होता सच्चाई तो यह है सिंधु घाटी/हड़प्पा सभ्यता आर्य वैदिक सभ्यता ही है।

वाल्मीकि रामायण जो महाभारत से भी हजारों लाखों वर्ष प्राचीन हैं यह अलग विषय है कि वामपंथी इतिहासकार रामायण ग्रंथ को ईसा पूर्व 600 का लिखित मानते हैं। उसके किष्किंधाकांड में पंपा सरोवर किष्किंधा नगरी का बड़ा ही सुंदर विस्तृत उल्लेख मिलता है जो कर्नाटक दक्षिण भारतीय राज्य का हिस्सा है। वहां महाराज सुग्रीव, हनुमान, अंगद, महाराज बाली उसकी पत्नी तारा को आर्य शब्द से ही संबोधित किया है। रामायण में द्रविड़ शब्द ढूंढने से भी दिखाई नहीं दिखाई देता।

वानरों की सभ्यता भी आर्य सभ्यता ही थी बालि का भी विधिवत वैदिक रीति से अग्नि संस्कार हुआ। दक्षिण भारत की आर्य सभ्यता कला कौशल में उत्तर भारत की आर्य सभ्यता से बढ़ चढ़कर थी। हनुमान, सुग्रीव, बाली आदि हमारे पूर्वज भौगोलिक तौर पर दक्षिण भारतीय आर्य थे। दक्षिण भारत का वह इलाका समुद्र पर्यंत इक्ष्वाकु वंश के नंदीग्राम से समस्त भूगोल पर शासन कर रहे चक्रवर्ती सम्राट महाराज भरत के ही अधीन था। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने बाली वध को उचित ठहराते हुए यह बात कही थी।

बहुत अधिक चावल खाने से दिल की बीमारी का खतरा

आमतौर हम भारतीयों के भोजन में अनिवार्य रूप से शामिल रहने वाला अनाज है चावल। कुछ लोग इसे हल्का भोजन बताते है, तो कुछ लोग इसे मोटापा बढ़ाने वाला भोजन करार देते है। वास्तव में हर भोज्य पदार्थ की तरह चावल के भी कुछ फायदे और नुकसान है। शोधकर्ताओं ने पाया है कि चावल जिसे हम बहुत प्यार करते है, उसके अत्यधिक सेवन से हम ज्यादा लंबा जीवन नहीं जी सकते है। चावल की फसलों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले आर्सेनिक (एक प्रकार का रसायन, रेडियोएक्टिव पदार्थ) के कारण बहुत सारे चावल खाने से दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

चावल में आर्सेनिक

आर्सेनिक पहले से ही उन क्षेत्रों की मिट्टी में मौजूद है जहां किसानों ने आर्सनिक-आधारित कीटनाशकों का उपयोग किया है। जब चावल की खेती की जाती है तो इसके पौधों द्वारा उक्त आर्सेनिक को अवशोषित कर लिया जाता है। कारण यह है कि चावल एक आसान लक्ष्य है, क्योंकि चावल के पौधे इस रसायन को आसानी से अवशोषित कर लेते है जबकि अन्य प्लांट ऐसा नहीं करते। मैनचेस्टर और सलफोर्ड वि विद्यालय के शोधकर्ताओं ने आर्सेनिक के संपर्क में आने से हृदय रोगों के बीच एक कड़ी खोजने के लिए इंग्लैंड और वेल्स में चावल की खपत के पैटर्न का अध्ययन किया। उन्होंने उन कारकों को भी देखा जो हृदय रोगों, जैसे कि मोटापा, धूम्रपान आदि की घटना में मदद करने के लिए जाने जाते है। अध्ययन के सहलेखक, मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने कहा, यह एक प्रकार का अध्ययन, जो एक पारिस्थितिक अध्ययन है, इसकी कई सीमाएं है, लेकिन यह निर्धारित करने का अपेक्षाकृत सस्ता तरीका है कि बढ़ी हुई खपत के बीच इसका संबंध है या नहीं। अकार्बनिक आर्सेनिक चावल के अत्यधिक प्रयोग से लोगों में हृदय रोग का खतरा बढ़ गया। इंग्लैंड और वेल्स में किये गये अध्यन से पता चलता है कि अनआर्गेनिक आर्सेनिक अवशोषित चावलों के अत्यधिक सेवन से उपभोक्ताओं में 25 प्रतिशत अधिक हृदय की बीमारी के जोखिम की आशंका है। जबकि चावल कम खाने वालों में यह संभावना 25% कम है। बढ़े हुए जोखिम को भी अपेक्षाकृत अत्यधिक चावल के आहार के साथ इंग्लैंड और वेल्स में उन समुदायों की संवेदनशीलता, व्यवहार और उपचार के एक हिस्से में दर्शाया जा सकता है।

तो क्या चावल खाना बंद कर दें

निश्चित रूप से कोई भी जहर नहीं खाना चाहता है, भले ही वह स्वादिष्ट हो। चावल की खपत और हृदय स्वास्थ्य पर इसके प्रभावों के बीच एक चिंताजनक संबंध की पुष्टि करने के लिए अधिक शोध की आवश्यकता है। शोधकर्ताओं ने यह भी कहा कि चावल फाइबर का एक समृद्ध स्रोत है। इसे पूरी तरह से आहार से बाहर करने के बजाय, लोग चावलों की विभिन्न किस्मों, जैसे कि बासमती, और अन्य प्रकार के चावलों का सेवन कर सकते है, जिनमें आमतौर पर कम रासायनिक आर्सेनिक का इस्तेमाल है।

- शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि चावल की फसलों में स्वाभाविक रूप से पाए जाने वाले आर्सेनिक (रेडियोएक्टिव पदार्थ) के कारण बहुत सारे चावल खाने से दिल की बीमारियों का खतरा होता है।
- आर्सेनिक उन क्षेत्रों में पहले से ही मिट्टी में मौजूद है, जहां किसानों द्वारा आर्सेनिक आधारित कीटनाशकों का इस्तेमाल किया है।

।।ओ३म्।।

आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल एवं वानप्रस्थाश्रम नोएडा
का भव्य वार्षिकोत्सव

दिनांक–11,12 व 13 दिसम्बर 2020 दिन–शुक्रवार, शनिवार, रविवार

स्थान–बी-69, सैक्टर–33, नोएडा (उ0प्र0)

सम्पर्क सूत्र–0120,2505731, 9899379304, 9871798221

निमंत्रण

धर्मानुरागी सज्जनों एवं देवियों! प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्यसमाज नोएडा के प्रांगण में वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्यों का विशाल मेला लग रहा है। इस अवसर पर मूर्धन्य विद्वानों, सन्यासियों एवं आर्य नेताओं के विचार एवं भजनोपदेशकों के मधुर भजन श्रवण करने को मिलेंगे। अतएव विनम्र प्रार्थना है कि इस अविस्मरणीय आध्यात्मिक आनन्द के लिए अवश्य पधारें।

कार्यक्रम

शुक्रवार दिनांक 11–12–2020 समय– प्रातः 08 बजे से 10 बजे तक

चतुर्वेद शतक महायज्ञ : यज्ञब्रह्मा– आचार्य डा. जयेन्द्र कुमार

भजन : पं. दिनेश पथिक

प्रसाद– सौजन्य : माता ओमवती गुप्ता–वानप्रस्थाश्रम नोएडा

शुक्रवार दिनांक 11–12–2020 समय– सांय : 06 बजे से 08 बजे तक

वेद प्रवचन : आचार्य डा. जयेन्द्र कुमार

भजन : पं. दिनेश पथिक

प्रीतिभोज– सौजन्य : श्री विजेन्द्र कठपालिया– मंत्री आर्यसमाज नोएडा

शनिवार दिनांक 12–12–2020 समय– प्रातः 08 बजे से 10 बजे तक

प्रसाद– सौजन्य : श्री अशोक आनन्द , सै0 12 नोएडा

शनिवार दिनांक 12–12–2020 समय– सांय : 06 बजे से 08 बजे तक

प्रीतिभोज– सौजन्य` – श्री योगेश अरोड़ा, सै0–44 नोएडा

मुख्य–समारोह

दिनांक 13–12–2020 दिन–रविवार

प्रातः 08 बजे 09:30 बजे तक (11 कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ) : यज्ञब्रह्मा– आचार्य डा. जयेन्द्र कुमार

ऋत्विक्– गायत्री मीना, ओमकार शास्त्री

भजन– पं. दिनेश पथिक

यज्ञ – सौजन्य : माता लक्ष्मी सिन्हा– वानप्रस्थाश्रम नोएडा

प्रसाद – 09:30 बजे 10:00 बजे तक

सौजन्य से – श्रीमती मधु भसीन मन्त्री–महिला समाज नोएडा

आर्य महासम्मेलन

रविवार दिनांक – 13–12–2020 समय– 10 बजे से 01 बजे तक

अध्यक्षता : श्री आनन्द कुमार (I.P.S)

मुख्य अतिथि : माननीय ठा. विक्रम सिंह, अध्यक्ष–राष्ट्र निर्माण पाटी

मुख्य वक्ता : श्री यशपाल शास्त्री(आर्यसमाज प्रीत विहार दिल्ली), डा. वीरपाल विद्यालंकार, श्रीमती गायत्री मीना

विशिष्ट अतिथि : श्री विजय गर्ग–आ.स. इन्दिरापुरम, श्री महेन्द्र चाटली–(आ.स. मयूर विहार), श्री वीरेश भाटी आर्यप्रतिनिधि सभा गौतमबुद्धनगर, डा. डी. के. गर्ग–अध्यक्ष ईशान संस्थान

प्रीतिभोज : सौजन्य– श्री अशोक अरोडा श्रीमती वीणा आरोडा, सैकटर–52 नोएड़ा

निवेदक

एम.एल. सरदाना, प्रधान

आर्य कै. अशोक गुलाटी, उपप्रधान

रविन्द्र सेठ–उपप्रधान

आदर्श बिश्नोई–उपप्रधान

नरेन्द्र सूद कोषाध्यक्ष

डॉ0 जयेन्द्र कुमार, प्राचार्य

ओमकार शास्त्री, उपाचार्य

विजेन्द्र कठपालिया, मंत्री

रविशंकर अग्रवाल–उपमंत्री

परेश गुप्ता–उपमंत्री

गायत्री मीना, प्रधाना

मधु भसीन, मंत्राणी

संतोष लाल, कोषाध्यक्ष

संरक्षक–श्री आनन्द चौहान–निदेशक, एमिटी शिक्षण संस्थान,श्रीमती सुकेश तायल, ब्रि अनिल अदलक्खा

(समस्त अधिकारी, कार्यकारिणी एवं सदस्यगण)

आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17 पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974 Postal Registration No.- UP/GBD- 249/2020-2022 Date of Dispatch 12 Every Month

महान समाज सुधारक निर्भीक संत वेदोद्धारक और आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

के निर्वाण दिवस पर शत्-शत् नमन!!

ओ३म् विश्ववारा संस्कृति ओ३म्

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221